इन्साफ़-संग्रह

दूसरा

लेखक मुंशी

मुंशी देवीप्रसादजी मुंसिफ़।

इन्साफ़-संग्रह

दूसरा भाग

लेखक मुंशी देवीप्रसादजी मुंसिफ़
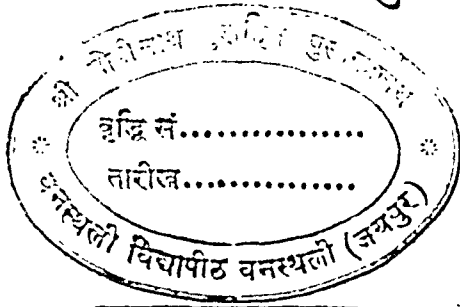
प्रकाशक

इंडियन प्रेस, प्रयाग

प्रथमवार] १९१९ [मूल्य ।=)

निवेदन

मैंने संवत् १९४० में पुराने इन्साफ़ों की वातों का संग्रह करके मीज़ान अदालत नाम की एक उर्दू किताव वनाई थी, फिर उसी का उलथा हिंदी में करके 'इन्साफ़-संग्रह' के नाम से छपवाया। अब यह दूसरा भाग भी तैयार हो गया है। इसमें ७० इन्साफ़ हैं जो ३७ न्यायकर्ताओं से बड़ी छान-बीन और बुद्धिमानी से किये गये थे। उनके नाम सूची में लिखे जाते हैं।

आशा है कि न्याय की रुचि रखने वाले महाशय उनको विचार-पूर्वक पढ़ेंगे और भूल-चूक क्षमा करेंगे।

देवीप्रसाद

अगहन सुदी १३ सोमवार संवत् १९७१)

जोधपुर

सूची

इन्साफ़-संग्रह

दूसरा भाग

महाराज दुष्यन्त ।

दुष्यन्त महाराज जो चंद्रवंशी राजाओं में बड़े धर्मात्मा हुए हैं, एक रात आराम करने के लिए सुख-भवन में गये ही थे कि दो अन्याय-पीड़ित पुरुषों ने आ कर प्रतीहार (ड्योढ़ीदार) से कहा कि महाराज को हमारी ख़बर दो। प्रतीहार बोला कि महाराज अभी काम करते करते सुख-भवन में गये हैं और सेज पर पौढ़े ही हैं; तुम ज़रा ठहरो। वे बोले कि राजा का धर्म प्रजा की पीड़ा सुनने का है, सुखशय्या पर पौढ़ने का नहीं है। तुम अभी जा कर हमारा हाल कहो या हमें अंदर जाने दो नहीं तो हम हाय! आह! मचाकर तुम्हारा और राजा का सुख नष्ट कर देंगे।

प्रतीहार, जिसको यह आज्ञा भी थी कि जब कोई पुकारू आवे तो उसकी ख़बर तुरंत देदिया करे, उन लोगों को शांत करके महाराज के पास गया। महाराज दुष्यंत अभी सोये नहीं थे, प्रतीहार को देखते ही बोल उठे, क्या है? प्रतीहार ने विनय-पूर्वक स्तुति करके प्रार्थना की कि पृथ्वी-नाथ! दो फ़र्यादी आये हैं और कहते हैं कि अभी महाराज से हमारी अर्ज़ करो। मैं कहता हूँ कि महाराज अभी आराम करने को पधारे हैं। तुम ज़रा धीरज धरो, पर वे नहीं मानते हैं; उनके आग्रह से विवश होकर चरण-कमलों में उपस्थित हुआ हूँ।

महाराज ने कहा कि सूर्य के रथ में जो घोड़े जोते गये हैं, उनको दम लेने का कहाँ अवकाश है। पवन जो रात-दिन चलने के लिए बनाया गया है चलने से कैसे रुक सकता है, शेषनाग जिसे भूमि का भार दिया गया है क्यों कर विश्राम ले सकता है। ऐसे ही राजा को भी, जो प्रजा की पैदावार का षष्ठांश खाता है, कहाँ आराम मिल सकता है।

इतना कह कर तुरंत महाराज दुष्यन्त बाहर निकल आये और उनकी पुकार सुनकर विचार करते हुए न्याय-भवन में चले गये और उनका न्याय कर दिया ।

क्या इस समय के राजा महाराजा भी जिनमें से बहुधा तो महाराज दुष्यन्त के वंशज होने का घमंड रखते हैं, महाराज दुष्यन्त के समान कभी अपनी प्रजा की पुकार सुनने के लिए अपने भोग-विलास पर लात मार देते हैं। जो महाराज दुष्यन्त से दूना तिगुना भाग उसकी खरी कमाई का खसोट कर खाते हैं, महाराज दुष्यन्त तो षष्ठांश ही लेते थे और ये माई के लाल ऐसे सपूत जनमे हैं कि आधा और कहीं आधे से ज़ियादा भी लाट लेते हैं और स्वयं न्याय न करके भाड़े के न्यायकर्ताओं से न्याय कराते हैं इसमें जो अनर्थ होता है उसको कोई क्या जाने? और क्या कहे? यदि किसी राजा महाराजा में कुछ श्रद्धा हो तो न्याय और नीति की रीति से अपनी प्रजा के साथ बात-चीत करके उसकी यथार्थ दशा जान सकते हैं और स्वयं न्याय भी कर सकते हैं।

मीनल देवी ।

मीनल देवी गुजरात के राजाधिराज करण सोलंखी की रानी और सिद्धराज जयसिंह की माँ थी। जब सिद्धराज जयसिंह बाल-क्रीड़ा से तीन बरस की उमर में बाप के जीते जी अनहिलपुर पट्टन के राजसिंहासन पर जा बैठा था और करण ने ज्योतिषियों से उसका शुभ मुहूर्त में सिंहासन पर बैठना और आगे को बड़ा प्रतापी राजा होना सुना तो उसके वास्ते वह सिंहासन छोड़ दिया और मीनल देवी को उसके बड़े होने तक उसके नाम से राज्य करने का अधिकार देकर अपने लिए दूसरा राज्यसिंहासन कर्णावती नाम नगरी में बना लिया। उस दिन से मीनल देवी अपने बेटे का संरक्षण और पाटण का राज्य-शासन करने लगी। उसने कई मंदिर, तालाब, बावड़ी और अन्न-दान के स्थान गुजरात में बनाये जो आज भी कुछ गिरे पड़े दिखाई देते हैं। उसका एक तालाब धोलके में भी है जिसको अलमनाल कहते हैं। मीनल देवी जब इस तालाब को बनवाती थी तो एक वेश्या का घर उसके घेरे में आता था। मीनल देवी ने उसको बुला कर कहा कि तू अपना घर हमको दे दे और मोल लेना हो सो ले ले।

वेश्या—क्यों ?

मीनल देवी—मुझे ज़रूरत है।

वेश्या—आपको ज़रूरत हो, पर मुझे तो ज़रूरत नहीं है।

मीनल देवी—अभी तो मुँहमांगे दाम देती हूँ, फिर इतना मोल नहीं मिलेगा।

वेश्या—मत मिलो। यहाँ वेचना किस को है। मोल का तो वह सोच करे जिसको वेचना हो।

मीनल देवी—वेचने में क्या हरज है, और न वेचे तो इसके वदले दूसरा मकान ले ले।

वेश्या—क्यों लेलूँ। भला जिस घर में मैं जन्मी, वड़ी हुई, और खाई खेली, अब मरती हुई उसको तो वेचदूँ और दूसरे घर में जाकर मरूँ यह कहाँ का न्याय है ?

मीनल देवी—अच्छा जो मोल और वदला नहीं लेती है तो वसे ही दे दे।

वेश्या—क्यों दे दूँ ? आप कुछ मुहताज नहीं हैं, महारानी हैं। सारा देश आप के अधीन है। फिर मुझ ग़रीबिन का घर क्यों छुड़ाती हो ?

मीनल देवी—मैं यों घर नहीं छुड़ाती; तेरी राज़ी-खुशी से लेती हूँ।

वेश्या—मैं तो देने को राज़ी नहीं हूँ; ज़बरदस्ती लेती हो तो यह घर पड़ा है ले लो।

मीनल देवी—ज़बरदस्ती लेती तो तुझे क्यों बुलाती और मोल की बात क्यों करती ?

वेश्या—मैं आप की न्याय-नीति देख कर ही तो इतना वाद-विवाद करती हूँ।

मीनल देवी—न्याय की ही बात तो मैं भी करती हूँ।

वेश्या—यह तो न्याय नहीं है कि एक ग़रीबिन का घर यों ले लिया जाय।

मीनल देवी—मैं यहाँ वस्ती के फ़ायदे के लिए एक तालाब बनवाती हूँ, तेरा घर उस के नाप में आता है, जो तू नहीं देगी तो तालाब का एक किनारा बाँका रह जायगा।

वेश्या—बाँके रहने का आपने भला सोच किया, इसका बाँका रहना ही पीढ़ियों तक आप की न्याय-नीति की याद लोगों को दिलाता रहेगा।

मीनल देवी—यह कैसे ?

वेश्या—बाँका रहने के साथ यह बात भी जगत् में विख्यात हो जावेगी कि यहाँ एक वेश्या का घर था उसने नहीं दिया और रानी ने भी अन्याय करके नहीं लिया और यह न्याय आपका प्रमाण हो जायगा। पिछले राजाओं में से जब कोई किसी पर अन्याय करेगा तो वह आप के न्याय की दुहाई देकर अन्याय न करने देगा। मीनल देवी ने गद्गद होकर कहा कि मेरे तालाब का एक किनारा क्या, चाहे चारों किनारे भले ही बाँके रह जायँ, परन्तु यह कोई न कहे कि अन्याय से प्रजा की ज़मीन ले लेकर इन कोनों को सीधा किया गया है। यह कह कर कर्मचारियों से कहा कि इसका घर छोड़ दो और पाल के टेढ़ी होने का सोच मत करो।

सिद्धराज जयसिंह ।

सिधपुर पाटण के महाराजाधिराज सिद्धराज जयसिंह बड़े धर्मात्मा और न्यायवान् राजा थे; परन्तु चारण-भाटों ने जैसी कि उनकी शैली ग्रन्थ-रचना की है, उनकी कई ऐसी कल्पित कथायें तो अपने ग्रन्थों में लिख दी हैं कि जिनसे निन्दा और अवगुण के सिवा और कोई अच्छी बात पढ़ने वालों के ध्यान में नहीं आती। न्याय और नीति या राज्य-प्रबन्ध की एक भी बात नहीं लिखी। परमेश्वर जामेउल-हिकायात * नाम तवारीख के कर्ता मोहम्मद औफ़ी का भला करे कि उसने सिद्धराज जयसिंह के न्याय का ऐसा सच्चा उदाहरण लिखा है जो न मुसलमानों के इतिहास में देखा गया है न अँगरेज़ों के इतिहास में, इससे स्पष्ट जाना जाता है कि हिन्दू राजा कैसे न्यायवान् और निष्पक्षपाती होते थे।

मोहम्मद औफ़ी लिखता है कि मैंने इस बात से अच्छी और बात नहीं सुनी। मैं एक बार खंभात में गया था, जहाँ बहुत से सुन्नी मुसल-मान रहते थे। मैंने उनसे सुना कि यह शहर नहरवाले और गुजरात के

* यह किताब संवत् १२६८ के आस पास सुलतान शमसुद्दीन एलतमश के राज्य में बनी है।

राजा जयसिंह के अधिकार में था। यहाँ उस समय मुसलमानों और आग पूजनेवालों (पारसियों) की बड़ी बस्ती थी। मुसलमानों की एक मसजिद थी और उसके पास एक लाट भी थी जिस पर खड़ा हो कर मुल्ला बाँग दिया करता था। आग पूजनेवालों ने विधर्मियों को बहकाया, जिन्होंने वह मीनार तोड़ डाला और मसजिद भी जला दी। इस झगड़े में ८० मुसलमान मारे गये। मसजिद का ख़तीब (उपदेशक) क़ुतुबअली था, वह बच कर नहरवाले में गया और वहाँ पुकारा परंतु राजा के दरबारियों में से किसी ने भी उसकी पुकार पर कान नहीं दिया और न कुछ सहायता की। हर एक दरबारी अपने धर्म वालों के बचाने को पक्ष-पात करता रहा। क़ुतुबअली ने सुना कि राजा शिकार को जाने वाला है, वह जंगल में जा कर उसके रास्ते पर एक पेड़ के नीचे बैठ गया। जब राजा उधर हो कर निकला तो क़ुतुबअली ने खड़े हो कर अर्ज़ की—हज़ूर हाथी को ठहरा कर जो मेरी पुकार है, वह सुन लें। राजा ने हाथी को रोक दिया। क़ुतुबअली ने हिन्दी में एक कविता बनाई थी। उसमें वह सब हाल आगया था। वही उसने राजा के हाथ में दे दी। राजा ने पढ़ कर अपने एक नौकर को हुक्म दिया कि इसको अपने पास सावधानी से रक्खो और जब मैं कहूँ तब दरबार में ले आना। राजा यह कह कर लौटा और मंत्री को बुला कर कहने लगा कि तुम राज्य का सारा काम करते रहना। मैं तीन दिन ज़नाने में रहूँगा। इस बीच में मुझे किसी राज-काज के लिए कष्ट न देना।

फिर राजा उसी रात को व्यापारियों के वेष में एक साँडनी पर सवार हो कर खंभात को चल दिया। एक दिन और एक रात में ४० फरसंग (१२० मील) चल कर वहाँ पहुँचा और एक एक गली-कूचे में फिर फिर कर क़ुतुबअली की पुकार का खोज लगाता रहा। जब ख़ूब निश्चय हो गया कि मुसलमानों पर बड़ा अन्याय हुआ है और वे मारे गये हैं तो एक बर्तन में समुद्र का पानी भर कर नहरवाले को लौटा और तीसरी रात को वहाँ पहुँच गया। तड़के ही उसने दरबार किया और क़ुतुबअली को बुला कर फ़रमाया कि तुम अपना सारा हाल कहो। उस ने सांगोपांग कह सुनाया। जब विधर्मी दरबारियों के दल ने चाहा कि उसे धमकावें और झूठा बनावें तब राजा ने अपने पानी वाले को हुक्म दिया कि वह पानी दरबार वालों को दे दे कि सब उस में से थोड़ा थोड़ा

पियें। हर एक ने उसको पीना चाहा, पर चख कर छोड़ दिया और जान लिया कि समुद्र का पानी है, पीने योग्य नहीं है। राजा ने कहा कि इस मामले में भिन्न भिन्न धर्म के लोग एक दूसरे से गठे हुए थे, इसलिए मैंने किसी का भरोसा नहीं किया और स्वयं खंभात में जा कर सब बातों की खोज की तो मालूम हुआ कि मुसलमानों पर वास्तव में ज़ुल्म हुआ है। फिर उसने कहा कि मेरा यह धर्म है कि अपनी सब प्रजा की सँभाल रक्खूँ और उनकी ऐसी रक्षा करूँ कि सब सुख से रह सकें—उसने हुक्म दिया कि विधर्मियों अर्थात् ब्राह्मणों, आग पूजने वालों और दूसरी जाति वालों में से दो दो आदमियों को दंड दिया जावे।

फिर राजा ने ख़तीब को कुछ बालोतरे (रुपये) उस लाट और मसजिद को फिर से बनाने के लिए दिये और ख़िलअत भी चार पारचे का इनायत किया। जिसके कपड़े अब तक रक्खे हुए हैं और किसी बड़े त्यौहार के दिन दिखाये जाते हैं।

राना रायमल।

राव सुरतान सोलंखी से पठानों ने टोड़ा छीन लिया था और वह चित्तौड़ के राना रायमल की शरण में चला आया था। राना ने उसको बदनोर का परगना दिया था। सुरतान की बेटी ताराबाई बहुत सुन्दर थी। राना के कुँवर जयमल ने उसकी शोभा सुनी तो बदनोर में जा कर राव से कहलाया कि अपनी बेटी का विवाह मुझ से कर दो। राव ने कहा कि मैंने अपने मन में यह बात ठान ली है कि जो कोई राजकुमार पठानों से लड़कर मुझको टोड़ा दिला देगा उसी को मैं अपनी लड़की दूँगा।

जयमल ने कहा कि मैं तुमको टोड़ा दिला दूँगा; तुम अभी विवाह न करो तो सगाई ही करदो ताकि मुझे तसल्ली रहे। राव ने सगाई करदी परन्तु इस पर भी जयमल के मन में यह तरंग उठी कि एक बार तारा को देख तो लूँ कि उसका रूप और लावण्य वैसा ही है या नहीं, जैसा कि मैंने सुना है और जिसके वास्ते पठानों से लड़ने के कठिन काम का बीड़ा उठाया है। जयमल यह अनीति ठान कर एक दिन तारा को देखने के लिए राव सुरतान के रनवास में घुस गया। तारा को देखा या नहीं, इसका तो किसी को कुछ पता न लगा; परन्तु यह बात सब के देखने में आगई कि राव सुरतान

ने यह ख़बर सुनते ही जयमल को मार डाला और राना के कोप से डर कर बदनोर से निकल जाने की तैयारी की; परन्तु न्यायवान् राना को जब इस वारदात की रिपोर्ट पहुँची तो उसने कहा कि जयमल ने अपने अपराध की सज़ा पाई। वह क्यों कुँआरी कन्या के देखने को एक राजपूत के रावले में गया था। राव सुरतान से कहला भेजा कि तुम बेखटके बदनोर में बैठे रहो। क़सूर जयमल का ही था। तुम्हारा कुछ क़सूर नहीं है। तुम अपनी लड़की ख़ुशी से उसको दो जो तुम्हारा पण पूरा करे।

इस न्याय से राव सुरतान की दिलजमई हो गई और लोक में भी राना रावमल की प्रशंसा हुई कि उसने बेटे का दारुण दुख तो सह लिया परन्तु इन्साफ़ को हाथ से नहीं जाने दिया।

राना राजसिंह।

संवत् १७१४ में जब उदयपुर के महाराना राजसिंह ने बादशाही मुल्क पर चढ़ाई करके कई शहर और क़सबे लूटे थे, तो मालपुरे की लूट में कुछ मुसलमान भी शामिल हो गये थे। परन्तु राजपूतों ने लूट का माल उनसे छीन लिया और उनको लशकर से निकाल दिया। उन्होंने महाराना से पुकार की और इन्साफ़ चाहा। महाराना ने उनकी सब हक़ीक़त सुन कर राजपूतों को बुलाया और कहा कि जब ये लोग अपने लशकर के साथ हैं तो लूट में इनका भी हक़ है और जो इनके कर्म-भाग में की लूट मिली है, वह इन्हीं के पास रहनी चाहिए। इस तरह से राजपूतों को समझा कर वह माल मुसलमानों को दिला दिया और न्याय करने में हिंदू-मुसलमानों का राग-द्वेष कुछ अपने मन में नहीं रक्खा।

महाराना सरूपसिंह।

(१)

एक रेबारी एक ढोलन को उदयपुर में उड़ा लाया और राज्य में नौकर होकर रानाजी तक जा पहुँचा, क्योंकि वह ऊँट ख़ूब फिराना जानता था। पीछे से ढोली भी अपनी ढोलन को ढूँढ़ता ढूँढ़ता आया और उसको रेबारी के पास देख कर दरबार में पुकारा। महाराना ने दोनों को बुला कर पूछा तो रेबारी ने कहा कि मैं इसको नहीं जानता। औरत भी इसकी नहीं, मेरी है। औरत ने भी कह दिया कि मैं ढोलन नहीं, रेबारिन हूँ। मैं इस रेबारी की बहू

हूँ । ढोली ने कहा कि औरत तो मेरी है पर अब इसके बहकाने से रेबारिन बनती है । मेरा इन्साफ़ होना चाहिए । मैं परदेशी हूँ । यहाँ मेरा कोई साक्षी भी नहीं है । फ़क़त हज़ूर के इन्साफ़ का सहारा है । रानाजी ने उससे कहा कि सवूत बिना कुछ नहीं हो सकता, तू सबूत ला या सब्र कर । परन्तु उसने ड्योढ़ी पर आना और पुकारना नहीं छोड़ा । निदान रानाजी के ध्यान में भी उसकी बात कुछ कुछ आने लगी, परन्तु युक्ति से उसको ड्योढ़ी पर आने की मनाई करके रेबारी पर धीरे धीरे मिहरबानी बढ़ाने लगे और यह भी फ़रमा दिया कि तू औरत को भी रावले में भेजा कर । जब वह आने-जाने लगी तो एक दिन जब कि वह महारानी साहिब के पास बैठी थी, महाराना रावले में गये और कुछ देर इधर उधर की बातें करके लौंडियों से फ़रमाने लगे कि जी नहीं लगता है । तुम बारी बारी से ढोलक बजाओ और गाओ । जब वे सब गा बजा चुकीं तो उस औरत से भी फ़रमाया कि तू भी गाना बजाना जानती हो तो ढोलक ले और अपना गाना सुना । यह वास्तव में तो ढोलन थी और अब अपने गुन की पूछ देखी तो फ़िसल पड़ी और ऐसी ढोलक बजाई और गाई कि रानाजी को यह यक़ीन हो गया कि यह रेबारिन नहीं है । रेबारिन होती तो कभी ऐसे ताल-स्वर से गाती बजाती नहीं । ढोली सच्चा है और यह रेबारी के पास आराम से रह कर उस ग़रीब को छिटका बैठी है । यह सोच कर उससे पूछा कि सच बता तू कौन है और लौंडियों को हुक्म दिया कि जब तक सच न कहे इसको यहाँ से मत जाने दो और ख़ूब पीटो । जब मार पड़ने लगी तो लाचार हो कर बोली कि मत मारो, मैं ढोलन हूँ और रेबारी के कहने में आ कर अब तक अपने को रेबारिन बताती रही हूँ । महाराना ने उसको बाहर ला कर रेबारी को बुलाया और फ़रमाया कि सुन, यह क्या कहती है । और ढोली को बुला कर कहा कि तू सच्चा है । यह तेरी औरत है, तू इसको ले जा और रेबारी को कुछ अरसे तक क़ैद रख कर उसका धन-माल सब छीन लिया ।

(२)

उदयपुर में एक ब्राह्मणी ने अपने गले का तिमणिया एक सुनार को बनाने के लिए दिया था । वह उसने बना कर ५ आदमियों के सामने उसको दे दिया । परन्तु फिर उसने कुछ सुधराने को दिया तो उस समय और कोई तीसरा आदमी नहीं था । आठ दिन पीछे उससे माँगने को गई तो कहा

अभी नहीं सुधरा है, दो चार दिन में दे दूँगा। फिर जो गई तो बोला कि मैंने तो तेरा तिमणिया कभी का पाँच आदमियों को गवाह करके दे दिया है, अब तू क्या माँगती है। उसने कहा, जब तो दे दिया था परंतु फिर सुधराने को दिया था सो नहीं दिया। सुनार ने कहा, फिर कब दिया था? और कौन गवाह है? ब्राह्मणी ने अपने पति से कहा, वह उस वक्त बीमार था। सुनार के पास नहीं जा सका। और फिर वह मर भी गया। ब्राह्मणी विधवा हो गई और शोक के कारण कुछ समय तक तिमणिया लेने को न जा सकी। फिर जब लेने गई तब सुनार उसको अबला और अनाथा जान कर उससे लड़ने लगा। तब उसने कोतवाली में पुकार की। कोतवाल ने सुनार को बुलाकर पूछा तो उसने कहा कि मैं इसका तिमणिया दे चुका हूँ और गवाहों को ला कर उनसे भी कहला दिया कि हमारे सामने इसको तिमणिया दिया है। कोतवाल ने दूसरी बार तिमणिया देने का सबूत ब्राह्मणी के पास न देख कर कहा कि तू झूठी है। तब वह दीवान के पास गई। वहाँ भी वही जवाब मिला। अन्त में उसने दरबार के झरोखे के नीचे जा कर फ़रियाद की, जिसमें महाराना सरूपसिंह प्रजा का दुख-दर्द सुनने के लिए बैठा करते थे। उन्होंने सुनार, कोतवाल और दीवान को बुला कर हाल पूछा तो सब ने अर्ज़ की कि गवाही और शाहिदी से तो यह झूठी है; आगे हज़ूर मालिक हैं। महाराना साहिब भी चुप हो गये। क्योंकि मामला आगे नहीं चल सकता था, परन्तु ब्राह्मणी ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। रोज़ आ कर झरोखे के नीचे बैठ जाती थी, और पुकारा करती थी। महाराना ने दिक़ हो कर एक दिन ख़ज़ाने से कई तिमणिये मँगाये और ब्राह्मणी के पास भेज कर कहलाया कि इनमें से पसंद करके एक ले लो और हमारा पीछा छोड़ दो। उसने अर्ज़ कराई कि मैं तो पुण्य लेने नहीं आती हूँ, इन्साफ़ कराने को आती हूँ। जब हज़ूर मेरा तिमणिया दिला देंगे तो फिर नहीं आऊँगी। नहीं तो बार बार आती रहूँगी। मुझ अबला पर बड़ा ज़ुल्म हुआ है; इन्साफ़ होना चाहिए।

महाराना साहब ने यह सुन कर अपने दिल में समझ लिया कि निःसंदेह सुनार इसका तिमणिया डकार गया है। यह सच्ची है। झूठी होती तो बैठ रहती; इतना पीछा न लेती। अब किसी युक्ति से इसका तिमणिया निकलवाना चाहिए।

यह सोच कर एक दिन उस सुनार को बुलाया और हुक्म दिया कि इसकी अँगूठी और दुपट्टा तो निशानी के वास्ते रख लो और इसको ख़ज़ाने में ले जा कर गहने दिखाओ और पूछो कि इनके समान दूसरे बना देगा या नहीं ।

दरबारियों ने यह हुक्म पाते ही उसको तो वहाँ ले जा कर बातों में लगा लिया और महाराना ने चोबदार से फ़रमाया कि रसोड़े में से इसके दुपट्टे पर .खून छिड़क ले और अँगूठी के साथ इसके घर ले जा कर सुनारिन को दे कर कह कि तेरे सुनार पर मार पड़ रही है जिससे यह उसका दुपट्टा .खून से भर गया है । यह उसने तेरे पास दिखाने को भेजा है और यह अँगूठी निशानी के वास्ते दी है और ब्राह्मणी का तिमणिया मँगाया है । अगर तू जल्दी दे दे तो उसकी जान बच जावे । सुनारिन ने उसी वक्त. तिमणिया चोबदार को सौंप दिया और हाथ जोड़ कर कहा, जैसे बने उसको घर भेज दो, मैं तुम्हारा बहुत गुण मानूँगी और विधवा होने से बच जाऊँगी ।

महाराना साहब ने वह तिमणिया दूसरे चार पाँच तिमणियों में रख कर उस सुनार के सामने ब्राह्मणी को दिखाया और फ़रमाया कि इनमें जो तेरा तिमणिया हो तो पहचान कर ले जा । ब्राह्मणी ने देखते ही अपना तिमणिया उठा लिया और महाराना को अशीस देती हुई चली गई ।

सुनार झूठा पड़ गया और माफ़ी माँगने लगा । महाराना ने जुर-माना लेकर छोड़ दिया और फिर ऐसी दग़ाबाज़ी न करने का मुचलका लिखा लिया ।

(३)

उदयपुर में एक बनियानी ने नहाते हुए अपने गले का तेडिया (तिम-निया) उतार कर ताक में रख दिया था । वह ताक आर पार था । दूसरी तरफ़ भैंस बँधी थी । भैंस ने उसको पीला पीला देखकर करबी के धोखे से खेंच कर पैरों में गिरा लिया । उसी समय एक राजपूत बनिये को ढूँढ़ने आया । बनियानी घर में जा बैठी । राजपूत भी बनिये को न देख कर चला गया । कुछ देर पीछे बनियानी ने तेड़िया को ताक में न देखकर जब बनिया आया तब उससे कहा कि राजपूत मेरा तेड़िया ताक में से उठा ले गया है । बनिये ने जा कर राजपूत से कहा तो वह बोला कि मैं तो बाहर से ही तुझे देख कर

चला आया था। तेड़िया मैंने देखा भी नहीं कि कैसा था। बनिये ने कहा, तूने नहीं देखा है तो मैं भोपाजी के पास जाता हूँ। वे देवता के बल से तुझे सज़ा देकर मेरा तेड़िया दिला देंगे। यह कह कर बनिया तो भोपाजी के पास गया और राजपूत ने महाराना सरूपसिंह जी के दरबार में जा कर वह सब हाल अरज़ किया। महाराना ने एक आदमी को बनिये के घर भेजा। उसने बनियानी से पूछा कि तेड़िया कहाँ रक्खा था। बनियानी ने वह ताक बता कर कहा कि मैंने इसमें रख दिया था। उसने दूसरी तरफ़ जा कर भैंस के पैरों में से घास हटाई तो तेड़िया पड़ा मिला। वह उठा कर चुपचाप महाराना के पास ले आया।

उधर बनिये ने अपने भरोसे के एक भोपे के पास जा कर कहा कि मैं तो घर में नहीं था, पीछे से एक राजपूत जो मेरा असामी है, आया और तेड़िया ताक में से उठा ले गया। भोपे ने बनिये से बलिदान की सामग्री माँगी जो कई रुपये की थी, बनिया दौड़ कर झट ले आया। कहा भी है कि बनिये का धन सवाद के वास्ते नहीं बाद के वास्ते होता है।

भोपा धूप-ध्यान करके पहले तो ख़ूब खेला और फिर सिर हिला हिला कर बोला कि तेरा तेड़िया वही राजपूत ले गया है। जा कर लेले, अब तो बनिया राजपूत के पास आ कर भूत की तरह चिपट गया और कहने लगा, कि या तो मेरा तेड़िया देदे या न्याय कराने को ड्योढ़ी पर चल। दोनों ड्योढ़ी पर लड़ते झगड़ते गये। महाराना ने बनिये से पूछा कि राजपूत के तेड़िया ले जाने का क्या सबूत है?

बनिया—मेरे भोपाजी ने कहा है।

महाराना—तेरा भोपा जी चोरी बता देता है?

बनिया—हाँ बाप जी, उनका यही काम है।

महाराना—कैसे बताता है?

बनिया—देवता का ध्यान करते हैं। देवता उनके सिर आ कर बता देता है।

महाराना—देवता हमारे सामने भी आ जावेगा?

बनिया—क्यों नहीं आवेगा, रोज़ आता है।

महाराना—तो तू जा कर भोपाजी को ले आ, हम उनको गोठ देंगे, और तेरे चोर का नाम भी पूछेंगे।

बनिया भोपा को ले आया। महाराना ने उससे पूछा कि शहर में तुम कितने भोपे हो जिनके सिर पर देवता आते हैं ?

भोपा—अन्नदाता जी, बहुत हैं।

महाराना—कल सब को पीछोला तालाब की पाल पर ले आओ, हमारी तरफ़ से गोठ दीजायगी और हम भी देखेंगे कि देवता कैसे आते हैं और क्या कहते हैं। क्यों कि हमने कभी आते देखे नहीं हैं। और दीवान को हुक्म दे दिया कि कल भोपों के गोठ की तैयारी जैसी यह कहे कर देना। हम भी वहाँ आवेंगे।

दीवान ने उसी दिन सब तैयारी खाने पीने और धूप-ध्यान की करदी। दूसरे दिन जब सब भोपे आ कर जमा होगये और ख़ूब खा-पीकर धूप-ध्यान करने और खेलने लगे तो महाराना भी वहाँ आगये और बोले कि इस बनिये का तेड़िया किसने लिया है ? उसका नाम बताओ। पहले तो बनिये के भोपे ने सिर हिला कर कहा कि इसका आसामी एक राजपूत है, वह ले गया है। फिर यही बात दूसरे भोपों ने भी कही।

महाराना—राजपूत का नाम बताओ।

भोपा—यह बनिया जानता है।

महाराना—अच्छा राजपूत ने तेड़िया लेजाकर कहाँ रक्खा है।

भोपा—अपने घर कोठी में रक्खा है।

महाराना—अभी कोठी में है ?

भोपा—हाँ।

राजपूत भी वहीं हाज़िर था। उसके साथ महाराना ने कोतवाल और भोपे को भेजा कि कोठी में से तेड़िया ले आओ। राजपूत ने अपने घर जा कर कोठी दिखा दी, मगर वहाँ तेड़िया नहीं था। कोतवाल ने भोपे से कहा कि अब बोलो। वह बोला कि और कहीं रख दिया होगा; यहीं ढूँढ़ो, मिल जावेगा। कोतवाल ने राजपूत का सारा घर ढूँढ़ मारा परन्तु कहीं तेड़िया नहीं मिला। तब लौट कर सब हाल महाराना से अरज़ किया। महाराना ने बनिये से कहा कि तेरे भोपे तो तेड़िया बता चुके, अब हम बताते हैं। यह

कह कर तेड़िया बनिये के सामने रख दिया और कहा कि तेरा तेड़िया यही है? उसने कहा, हाँ बाप जी, यही है। तेड़िये को देख कर भोपे खिसिया गये। महाराना ने उनसे कहा कि तुम लोग मेरी प्रजा को झूठ ही झूठ से ठग ठगकर खा गये हो। आज मैंने तुम सब को पकड़ पाया है। जो चाहूँ वह सज़ा दे सकता हूँ। परंतु दया करके इस शर्त पर छोड़ता हूँ कि तुम फिर कभी इस तरह देवताओं को बदनाम न करना और लोगों को मत ठगना। और बनिये से कहा, तूने राजपूत को नाहक चोर बनाया, उससे माफ़ी माँग। और राजपूत से कहा कि इसने भोपों के बहकाने से तुमको दुख दिया। राजपूत ने अर्ज़ की कि दरबार के न्याय से मेरा मुँह उजला हो गया, मैंने इसीमें सब कुछ भर पाया। बनिये ने भी राजपूत के पैरों में पगड़ी रख दी और कहा कि मेरा कहा सुना माफ़ करो और कहो तो अपना लेना भी तुमको छोड़ दूँ। उस भलेमानस ने कहा कि तेरा लेना तो मेरे देने से छूटेगा, मैं यों बिना दिये नहीं छुड़ाना चाहता।

(४)

उदयपुर की दो औरतें तालाब पर नहा रही थीं, एक ने अपना तेड़िया गले से उतार कर कपड़ों के पास रख दिया था। एक महावत हाथी को पानी पिलाने आया और उनकी आँख बचा कर तेड़िया हाथी से उठवा ले गया। नहा चुकने के पीछे जब कपड़ों के पास तेड़िया न मिला तो उस औरत ने, जिसका वह तेड़िया था, दूसरी से कहा कि तूने मेरा तेड़िया ले लिया और उसको कोतवाली में लेगई। कोतवाल ने उससे पूछा तो कहा कि मैंने इसका तेड़िया तालाब पर कपड़ों के पास रक्खा तो देखा था मगर लिया नहीं है। कोतवाल ने कहा कि जब देखा और लिया नहीं तो फिर तेरे सिवा और कौन ले गया? तू या तो इसका तेड़िया दे या चोर बता। उसने कहा कि मैंने किसी को लेते देखा भी नहीं है, फिर किस को चोर बताऊँ। कोतवाल ने न माना और उसको पीटने का हुक्म दिया, तब वह दरबार की दुहाई देती हुई ड्योढ़ी पर गई। महाराना सरूपसिंह जी ने उसका हाल सुन कर पागियों को हुक्म दिया कि जहाँ ये औरतें नहा रही थीं वहाँ जा कर देखो कि किस किस के खोज हैं और वे कहाँ जाकर थकते हैं। पागियों ने देखा तो हाथी के खोज और खोजों से ताज़े थे। वे उन्हीं खोजों पर चलते चलते पीलख़ाने में पहुँचे और वहाँ उसी हाथी और उसके महावत

को पकड़ा। महावत डर गया। क्योंकि 'चोर की दाढ़ी में तिनका' की मसल मशहूर ही है और बोला कि यह तेड़िया हाथी सूँड से उठा कर चबाने लगा था, मैंने तो इसके मुँह से निकाला है। मालूम नहीं किसका है। पागी और कोतवाली के प्यादे उसको ड्योढ़ी पर ले गये। महाराना ने तेड़िया तो उस औरत को दिला दिया जिसका था और जिस औरत को उसने चोरी लगाई थी उसे सच्ची करके मान-सम्मान से घर भेजा और महावत से कहा, माना कि हाथी उठा लाया था पर तुझे तो राज में रिपोर्ट करनी थी, सो क्यों नहीं की? इसलिए चोर तू ही रहा। यह कह कर उसको नौकरी से दूर कर दिया और कोतवाल से कहा कि सबूती बिना भरम या किसी के कहने मात्र से यों चोरी निकलवाने के वास्ते किसी को मार-पीट नहीं करनी चाहिए।

राव रतन हाडा।

बूँदी के राव रतन हाडा का बेटा गोपीनाथ एक ब्राह्मण[१] के घर में चाम चोरी करने जाता था और उसको निकाल कर उसकी स्त्री से मौज उड़ाता था। वह बेचारा उससे बहुत नम्रता और विनय करके कहता था कि आप देश के धनी हो। आप को प्रजा के घर में बलात्कार घुस कर ऐसी अनीति नहीं करनी चाहिए। परन्तु वह कुछ नहीं सुनता था वरन् उलटा उसको पीटने लगता था। तब तो एक दिन उसने कड़ो छाती करके राव रतन से एकान्त में कहा कि मेरे घर में एक राजपूत अन्याय से ऐसा अत्याचार करता है। मैं क्या करूँ और कैसे उससे अपनी इज्ज़त बचाऊँ? राव ने कहा, जो ऐसा है तो उसको मार क्यों नहीं डालता?

ब्राह्मण ने कहा, मार डालूँ? आपकी आज्ञा है? राव बोले, जो ऐसी अनीति करे उसको मार डालना ही चाहिए। ब्राह्मण तथास्तु कह कर घर आया और पौल में छिप रहा। रात को जब गोपीनाथ आया तो उसको पकड़ कर कटारियों से मार डाला और लाश चौराहे में फेंक दी।

---

(१) यह ब्राह्मण चंदेरिया जाति का था।

तड़का होते ही बड़ा हाहाकार मचा और कोतवाल ब्राह्मण को पकड़ कर राव रतन के पास लेगया और कहने लगा कि इस हत्यारे ने एक तो कुँवर को मार डाला और दूसरे हठधर्मी से कहता है कि मैंने यह काम दरवार से पूछ कर किया है। राव रतन ने कहा, इसको छोड़ दे, कुँवर के लच्छन इसी योग्य थे। वह क्यों इसके घर जाता था ? यह सुन कर कोतवाल ने ब्राह्मण को छोड़ दिया औ वह राव को आशीर्वाद देता हुआ घर आया।

राव ने कुँवर को छार-बाग में दाग दिलवा दिया और इस न्याय का अपनी प्रजा में बहुत जस लिया।

महाराजा सवाई जयसिंह।

जयपुर के एक गाँव के जाट बहुत सरकश थे। जो हवलदार उनका कहना नहीं मानता था, उसको कुछ न कुछ दोष लगा कर निकाल देते थे। दीवान ने दिक़ हो कर महाराज से अरज़ की और महाराज ने अपने भरोसे के एक आदमी को भेजा। उसने अपने काम से काम रक्खा और जाटों का कहना न माना, जो राज के नुक़सान का था। तब जाटों ने उसके निकाल देने के वास्ते यह प्रपंच रचा कि जब वह गाँव के बाहर दौरा करने को गया तो गाँव की सुन्दर कुआरी कन्याओं में से एक जवान लड़की को सिखा पढ़ा कर रास्ते में बैठा दिया। जो हवलदार को आता देख कर एक पेड़ काटने लगी और हवलदार के टोकने पर उससे लिपट गई और बोली कि तूने मेरी इज्ज़त लेली है। मैं तुझे राज में ले जाऊँगी और इस अत्याचार की सज़ा दिलाऊँगी। जाट जो इधर उधर छिपे हुए थे, दौड़ कर आ गये और लड़की को जयपुर में ला कर राजा जी की ड्योढ़ी पर फर्याद फ़र्याद पुकारने लगे। दीवान तो सुन कर हक्काबक्का रह गया, परन्तु महाराज ने कहा कि वह आदमी ऐसा तो नहीं था ; ख़ैर बुलाओ और पूछो कि यह क्या बात है। उसने आ कर वह सब हाल कहा तो महाराज और भी हैरान हुए और सोचने लगे कि क्या किया जाय। जाट तो कहते थे कि हमारा इन्साफ़ कीजिए नहीं तो हम गाँव उजाड़ कर चले जावेंगे और इधर हवलदार अपने दिल में डरता था और कहता था कि कहीं ऐसा न हो कि मैं भी अगले हव-लदारों की तरह अबूझन मारा जाऊँ। महाराज ने जाटों को तसल्ली देकर

कहा कि तुम ठहरो और जयपुर को देखो जो अभी नया बसा है। हम तुम्हारा इन्साफ़ ही करेंगे, जिसका क़सूर होगा उसको सज़ा देंगे।

जाट रोज़ आ कर मुजरा कर जाते थे। एक दिन उन्होंने अर्ज़ की कि हम जयपुर तो देख चुके, अब हमारे वास्ते क्या हुक्म है ?

महाराज ने .फरमाया कि महल भी देखलो और नाज़िर खोजों को हुक्म दिया कि जाटों को मरदाने और जाटनियों को .जनाने महलों में ले जाओ और सब चीज़ें दिखाओ, जाटनियाँ जब अंदर गईं तो वह लड़की भी साथ थी। महारानी साहिबा ने, जिनको महाराज का इशारा पहुँच गया था, उनसे कहा कि तुम महल देख आओ तब तक हम तुम्हारी लड़की से बातें करते हैं, क्योंकि यह हमको बहुत भली लगती है। उन्होंने अर्ज़ की कि लड़की तो भली ही थी, पर हाय ! तुम्हारे नौकर ने इस कुँआरी कन्या को कलंक लगा कर बिगाड़ दिया है। यह कह कर वे तो महल देखने चली गईं और महारानी लड़की से बातें करने लगीं। इतने ही में तो महाराज भी जा पहुँचे और उस लड़की को रानी जी के पीछे खड़ी देख कर कहने लगे कि देखो यह लड़की कैसी सुन्दर है, आज तक हमने तो कभी ऐसी सुन्दर लड़की नहीं देखी थी। परन्तु क्या कीजिए इसके एक कलंक लग गया है। जो ऐसा न हुआ होता तो हम इसको व्याह कर रानी बना लेते और यह भी इन महलों में रह कर तुम से ज़ियादा गुलछर्रे उड़ाती।

लड़की यह सुन कर बोल उठी कि नहीं महाराज, मेरे तो कोई कलंक नहीं लगा है। बल्कि मैंने अपने घर वालों के सिखाने से आपके नौकर को कलंक लगाया है। महाराज ने पूछा, यह कैसे हुआ ? सच बात हो सो कहदे, तुझको गुनाह माफ़ है। यह सुन कर उसने सब कच्चा हाल कह दिया। महाराज ने फ़रमाया, अच्छा तूने जो यहाँ कहा है वह अपने घर वालों के सामने भी कह देगी। उसने कहा, हाँ महाराज, कह दूँगी। महाराज उसको दरबार में ले आये। इतने में जाट भी आगये। महाराज ने हवलदार को भी बुला लिया और उससे जाटों की फ़र्याद का जवाब पूछा। उसने अर्ज़ किया कि यह झूठे हैं। महाराज ने लड़की से कहा कि तूने सुना यह क्या कहता है ? उसने अर्ज़ की कि हज़ूर यह सच कहता है। इसने कभी नज़र उठाकर भी मेरे सामने नहीं देखा था। यह बहुत भला आदमी है। महाराज ने पूछा, फिर तूने

इतना बड़ा कलंक कैसे इसके और अपने ऊपर लगाया। उसने अपने घरवालों की तरफ़ इशारा करके कहा कि इनके कहने से। यह कह कर उसने उस प्रपंच का भाँडा फोड़ डाला और जिस जिसने जो जो पट्टी पढ़ाई थी उसकी कलई उसी के सामने खोल दी। अब तो जाट फीके पड़ गये और माफ़ी माँगने लगे। महाराज ने भी माफ़ी दे कर फ़रमाया कि आगे से फिर कभी सरकारी आदमी पर ऐसा कलंक न लगाना, नहीं तो दूनी सज़ा दी जावेगी। लड़की से कहा कि तू सच बोल गई, अच्छा हुआ। अब किसी तरह की कुछ रुकावट तेरे व्याह होने में न होगी और उसके घर वालों से फ़रमाया कि इसकी शादी तुम अपनी विरादरी के किसी अच्छे घर में कर देना। राज की तरफ़ से भी मदद मिलेगी और यह हवलदार जो तुमको पसंद न हो तो दूसरा ले जाओ।

जाटों ने अर्ज़ की कि जब हज़ूर ने हमारे गुनाह बख़्श दिये हैं तो हवलदार भी यही हमको बख़्शा जावे। हमने बहुत झक मारी जो अपनी नालायक़ी से इसको इतनी तकलीफ़ दी। और संसार में हम हलके और बदनाम भी हुए। निदान वे उसी हवलदार को राज़ी कर के ले गये। महाराज ने भी उसकी इज़्ज़त बढ़ाने के लिए बहुतसा गहना और कपड़ा देकर उसको विदा किया।

महाराजा बख़्तसिंह।

एक साहूकार ने अपने कुछ जवाहरात दिल्ली में दूसरे साहूकार के पास अमानत रक्खे थे। उसके मरे पीछे जब उसके बेटे को वह अमानत मिली तो उसमें आधे नग पक्के और आधे कच्चे थे। उसने बादशाही कचहरी में दावा किया कि अमानतदार ने सच्चे नग निकाल कर झूठे मिला दिये हैं। और वह कहता था कि जैसे मेरे पास रक्खे थे मैंने दे दिये। इस बात को कोई न्यायाधीश नहीं मानता था कि इतना बड़ा साहूकार झूठे नग सच्चे नगों में मिला कर क्यों अमानत रखता? और सब अमानतदार की ही बेईमानी बताते थे। निदान कई न्यायालयों में अभियोग का पूरा निदान न होने से प्रतिवादी ने बादशाह की पालकी पकड़ी। बादशाह ने कारण पूछा तो कहा कि मैं अन्याय से निरपराध मारा जाता हूँ।

बादशाह ने नग मँगा कर देखे तो उसकी भी समझ में कोई बात सच्चे या झूठे नग मिलवाँ होने की नहीं आई। तब किसी ने अर्ज़ की कि न्याय तो महाराजा बख़्तसिंह ख़ूब छानबीन कर करते हैं। बादशाह ने यह सुन कर वह मुक़द्दमा महाराजा के पास भेज दिया।

महाराजा ने नगों को देख और गिन कर दोनों पक्षवालों का वाद-विवाद सुन कर कुछ समय तक मन में विचार किया और सब झूठे नगों को अलग अलग कराके तुलवाया; तो दोनों जैसे गिनती में बराबर थे वैसे ही तोल में भी बराबर निकले। तब महाराज ने कहा कि इसमें किसी की बेईमानी नहीं है। ये झूठे नग सच्चे नगों के साक्षी हैं। जो इनके शुमार और तोल में कुछ फ़र्क़ होता तो ऐसा कह सकते थे कि अमानतदार ने कुछ कपट किया है। ये तो अमानत रखने वाले ने बुद्धिमानी से पहले दिन ही इसी तरह से गिन कर और तोल कर रक्खे थे कि जो कोई पीछे चोरी करे तो गिनती और तोल में न्यूनाधिक होने से पकड़ा जावे। सो कोई चोरी नहीं हुई है। जिस साहूकार को ऐसा दोष लगाया जाता है, वह सच्चा है। वृथा ऐसे प्रतिष्ठित पुरुष की मान-हानि की गई है। इस इन्साफ़ से दोनों पक्ष वाले राज़ी हो गये और बादशाह ने भी महाराज की न्याय-निपुणता की बहुत प्रशंसा की।

महाराजा विजयसिंह ।

जोधपुर में दो जाति के लोग दूध बेचते हैं। एक घाँची, दूसरे घोसी। घाँची तो हिन्दू हैं और घोसी मुसलमान; परन्तु हिन्दू लोग घोसियों का अधिक विश्वास रखते हैं कि ये दूध में पानी नहीं मिलाते। श्रीमाली ब्राह्मण जो आचार-विचार के बहुत पक्के होते हैं वे पहले तो अपने घर से पानी ले जा कर घोसी के हाथ धुला देते थे फिर अपने बर्तन में उससे दूध दुहा लेते थे परन्तु अब ऐसा नहीं करते क्योंकि समय बदल गया है।

एक बार एक धनवान् श्रीमाली ब्राह्मण का लड़का दूध लेने गया और घोसिन के हाथ धुला कर दूध दुहाने लगा। जब वह दुह चुकी तो लड़के की आँख बचा कर थोड़ा सा पानी दूध की चरी में डाल दिया। लड़के ने देख लिया और रोष में आ कर उसके मुँह पर दो तीन थप्पड़

मार दिये। घोसिन कोतवाली में गई। लड़का भी उसके साथ हो लिया। कोतवाल धनवानों का लागू ही था। उसने लड़के को देखते ही ताड़ लिया कि यह किसी धनवान् आदमी का बेटा है। घोसिन की पुकार सुन कर उसके कान में कहा कि तूने बड़ा जुर्म किया जो इस अबला को मारा। बस! इसका दण्ड यही है कि या तो ३००) रुपया गुनहगारी के दे नहीं तो भाकसी (जेल) में बैठ। लड़के ने कहा कि भाकसी में बैठने से तो मेरी और मेरे बाप की इज़्ज़त जाती रहेगी। ३००) मैं घर जा कर दे दूँगा, मेरे साथ आदमी करदो। घोसिन कुछ दूर खड़ी थी. लड़के ने कोतवाल को २००) रुपया और देना ठहरा कर दो और थप्पड़ उसके मार दिये। कोतवाल ने अपना आदमी उसके साथ करके कहा कि अभी ५००) रुपया इसके हाथ भेज देना नहीं तो तुझे घर से पकड़वा मँगाऊँगा और भाकसी में डाल दूँगा। लड़के ने घर जा कर बाप के आगे दूध धर दिया और वह सब हाल कहा। बाप को बहुत ग़ुस्सा आया कि कोतवाल ने न्याय तो किया नहीं और ५००) रुपया माँग लिये। अच्छा दे दो; कहाँ जाते हैं। अभी तो धर्मी राजा विजयसिंह जी राज करते हैं। देखें कोतवाल कैसे मेरे रुपये खा जावेगा। यह कह कर श्रीमाली ने अपने महल्ले के मन्दिर में ५००) रुपये कोतवाल के आदमी को गिन दिये और दरबार की ड्योढ़ी पर जा कर वेद पढ़ने लगा। वह जैसा धनवान् था, वैसा ही वेद-पाठी भी था।

महाराजा ने वेद-ध्वनि सुन कर फ़रमाया कि यह ब्राह्मण क्या चाहता है। श्रीमाली ने वह दूध की चरी भेज कर अरज़ कराई कि मैं कुछ नहीं चाहता। मैं यह इन्साफ़ चाहता हूँ कि इस दूध में पानी है या नहीं और कोतवाल ने अभी मुझसे ५००) रुपये ले लिये हैं; वह किस बात के हैं?

महाराजा ने कोतवाल से कहलाया कि आज अभी एक आदमी जो ५००) रुपये तेरे पास लाया है, उन रुपयों को ले कर फ़ौरन आ।

कोतवाल झट पट उन रुपयों को वही में लिख कर ले आया और घोसिन को भी लाया जो यह पुकार करती हुई आई कि बिना क़सूर मेरे थप्पड़ मारे हैं; धनी न्याय करावें।

महाराजा ने सबको सामने बुला कर घोसिन से पूछा कि तूने दूध में पानी मिलाया है?

घोसिन—नहीं मिलाया।

ब्राह्मण—झूठी है, यह पानी मिलाया दूध हाज़िर है।

कोतवाल—पानी मिलाया था तो राज में पुकारना था, मारने की क्या ज़रूरत थी।

घोसिन—अन्नदाता जी! दो थप्पड़ तो मेरे कोतवाल के सामने ही मारे हैं।

कोतवाल—हाँ अन्नदाता जी सच कहती है।

ब्राह्मण का लड़का—हाँ हुज़ूर, परन्तु कोतवाल से पूछिए कि फिर इसने ५००) रुपये किस बात के लिये हैं।

कोतवाल—गुनहगारी (.जुर्माने) के लिये हैं।

महाराजा—दूध जाँचे बिना पहले कैसे गुनहगारी लेली।

कोतवाल—(कान पकड़ कर) यह तो क़ुसूर हुआ।

महाराजा ने जुआर के फडड़ों को छिलवा कर दूध में डलवाये। जब वे भीग कर फूल गये तो हुक्म दिया कि निचोड़ो। निचोड़ने से पानी निकला तो घोसिन से पूछा कि यह कहाँ से आया? तब उसको भी कहना पड़ा कि मुझसे क़ुसूर हुआ।

महाराज ने फ़रमाया कि तू ब्राह्मणों का धर्म भ्रष्ट करती है, परन्तु इस लड़के ने देख लिया तो दूध नहीं खाया और तेरे थप्पड़ मारे, इस लिए मैं तेरा कसूर माफ़ करता हूँ, फिर ऐसा मत करना, और यह दूध लेजा, कल इस लड़के को अछूता दूध दे देना। फिर कोतवाल से फ़रमाया कि तू धनवानों से रुपये ले लेकर मेरी ग़रीब प्रजा को पिटवाता है, इसलिए तू कोतवाली करने योग्य नहीं है। दूसरे कोतवाल को काम सौंप दे।

ब्राह्मण से कहा कि अपने ५००) ले जाओ, परंतु तुम्हारा बेटा धन के घमंड से घूंस दे दे कर ग़रीबों को पीटता है इस की अभी से यह धृष्टता अच्छी नहीं है, इस को समझा दो कि फिर ऐसा न करे।

महाराज के इस न्याय की जो तुरत फुरत हो गया था, बहुत प्रशंसा हुई। वादी, प्रतिवादी और कोतवाल वगैरह सब समझ गये कि जिसने जैसा किया था उसने वैसा पा लिया।

महाराजा मानसिंह।

जोधपुर के परगने में मथानिया नाम एक बड़ा साशन गाँव चारणों का है। वहाँ का एक हिस्सेदार कम उमर था। उसका विवाह भी नहीं हुआ था। उसके काका की नियत उसकी भी ज़मीन अपनी ज़मीन में मिला लेने की थी, इसलिए एक दिन उसने भतीजे से कहा कि तू चले तो तुझे भी द्वारिका की यात्रा करा लाऊँ। वह भोला था। यात्रा की उमंग से उसके साथ हो गया। एक दिन रास्ते में मेंह बरसने लगा। कपटी काका ने भतीजे से कहा कि आज की रात यहीं रह जावें, माताजी को बकरा चढ़ावेंगे, दारू पियेंगे, और रतजगा करेंगे। भतीजा बेचारा राज़ी होगया। वह क्या जानता था कि यह कपटी काका कुछ देर में ही काल का स्वरूप धारण करके उस का काम तमाम कर देगा।

काका भतीजे को एक छप्पर के नीचे बैठा कर बाहर गया और धूप-दीप, सिंदूर और शराब मोल ले कर एक बकरा भी किसी का पकड़ लाया। और माता जी के नाम की जोत करके शराब की धार दी। फिर आपने भी पी और भतीजे को भी पिलाई। जब नशा आ गया तो भतीजे से कहा कि अब बलिदान का समय आ गया है, तू इस बकरे की टाँगें पकड़ ले, मैं इसका माथा काट कर माता जी को चढ़ाता हूँ। ज्योंही भतीजे ने उसकी टाँगें पकड़ीं, कुटिल काका ने तलवार निकाल कर बकरे के तो नहीं मारी, भतीजे को मार कर उसका बलिदान दे दिया। उसकी लाश एक गढ़े में गाड़ कर उसी वक़्त वहाँ से रवाना हो गया। कुछ समय पीछे अपने गाँव में आया तो भतीजे की माँ ने पूछा कि मेरा लड़का कहाँ है? उसने कहा कि भाभी जी! वह तो रास्ते में से ही लौट आया था। क्या यहाँ नहीं आया?

यह सुनकर वह बेचारी दिल में तो समझ गई कि यह मेरे बेटे को मार आया है, परन्तु मुँह से कुछ न बोली और भेद लगाने के लिए रात को उसके घर के पीछे जा कर खड़ी हो जाया करती थी और उसकी बातों पर कान लगाये रहती थी। एक रात को मेंह बरसता था और पानी में बूंदों के पड़ने से बुलबुले उठते थे। मारवाड़ी बोली में बुलबुलों को पनिहारियाँ कहते हैं। उन्हें देखकर उस हत्यारे को भतीजे के मारने की

बात याद आ गई। क्योंकि उस वक़्त भी मेह बरसता था और इसी तरह से बुलबुले उठ रहे थे और उस ग़रीब की नज़र बुलबुले की तरफ़ थी। अब उनको देखते ही वह सारा समय उसकी आँखों में फिर गया और ख़ून उसके सिर पर सवार हो गया। वह अपनी औरत से कहने लगा कि लौकिक में ऐसा कहते हैं कि खोटे काम की साख (साक्षी) तो पनहारियाँ भी भरदेती हैं। मैंने जो एक काम किया है क्या ये पनहारियाँ अब उसकी साख भरने को आई हैं? औरत ने पूछा कि तुमने ऐसा क्या काम किया है। मुझसे भी तो कहो। वह कहता नहीं था परन्तु स्त्री का हठ बुरा होता है। निदान उसे कहना पड़ा कि मैंने अपने भतीजे को मारा था, उस वक़्त भी यही रूपक था जो आज बना है। औरत ने कहा, तुम बहकते हो, कोई भी अपने भतीजे को मारता है? जो बेटे के बराबर होता है। उसने कहा कि मैंने मारा है। और इस तरह मारा है। औरत ने कहा, चुप रहो, उसकी मां को पहले से ही तुम्हारा भ्रम है और वह सेसू (ख़बर) लेती फिरती है। कहीं सुन न ले! उसने कहा कि सुन लेगी तो क्या करेगी? गवाह तो कोई है नहीं। एक था वह तभी का भागा हुआ है। औरत ने हँस कर कहा कि वह भागा है तो क्या हुआ। ये पनिहारियाँ जो गवाही देती हैं, वही शायद फिर भी दे दें। यह सुनकर वह सुन्न हो गया। भतीजे की मां घर के पीछे खड़ी हुई ये सब बातें सुनती थी, उसने उसी दम गाँव वालों को सोते से जगाया और वह सब हाल सुना कर कहा कि मेरे बेटे को इसी ने मारा है। गाँव में इस पर बड़ा कोलाहल मचा। सबेरे ही जोधपुर में ख़बर पहुँची। महाराजा मानसिंह जी से भी अर्ज़ हुई। महाराजा ने तहक़ीक़ात का हुक्म दिया। उससे यह मामला खुल गया। वह भागा हुआ गवाह भी आ गया, जो उस वारदात को आँखों से देख चुका था, और जब लाश भी निकल आई, तब महाराजा ने उस औरत से पुछवाया कि अब तू क्या चाहती है? उसने कहा कि हत्यारा मेरा देवर है। इसने ज़मीन के लालच से मेरे बेटे को मारा है, वह ज़मीन इस को न मिले। राज में ज़ब्त करली जावे और मेरे बेटे की छत्री बनवा दी जावे, उसके पीछे और जो कुछ धर्म-पुण्य करना है वह मैं कर लूँगी। ख़ूनी को राज चाहे मारे चाहे छोड़े। मेरा बेटा तो अब लौट कर आने का नहीं है। उसने जैसा कहा, महाराजा ने

वैसा ही कर दिया। हत्यारे को मारा तो नहीं। भाकसी (काल-कोठड़ी) में डाल दिया जहाँ से वह मरकर छूटा।

महाराजा तखतसिंह।

(१)

जोधपुर के महाराजा तख़तसिंहजी के हजूर में जोधपुर और पाली के बनियों का एक इन्साफ़ आया जो अदालत वालों से न हो सका था। उनके साथ दोनों की वहियाँ भी थीं। झगड़ा यह था कि पालीवाला बनिया तो यह कहता था कि मैंने जोधपुर के बनिये के हिसाब में जो रुपया दिया है वह मेरी वही में लिखा है। जोधपुर वाला इन्कारीथा और कहता था कि जो दिया होता तो मेरी वही में लिखा जाता। इसने झूट लिख लिया है। वह कहता था कि इसकी वही झूठी है, और वहियें दोनों की ही सर्राफी क़ायदे से ठीक थीं। इसलिए बिना प्रमाण किसी को झूठा या सच्चा नहीं कहा जा सकता था। महाराजा साहिब ने जोधपुर के पञ्च महाजनों और सेठ-साहूकारों को बुलाया और कहा कि इन वहियों को देख कर सच झूट का निर्धार करो। ये पहले भी वहियाँ देख चुके थे और अब फिर महाराजा साहिब के सामने भी देखने लगे। देखते देखते दोपहर दिन चढ़ गया परन्तु कुछ पता न लगा और भूख-प्यास से थक कर बोले कि अब तो हमें घर जाने की आज्ञा हो तो स्नान सेवा करके रोटी खावें और यह न्याय हमारे वश का नहीं है। हजूर से ही होगा क्योंकि हजूर धनी परमेश्वर हैं। उनकी यह अर्ज़ महाराजा साहिब को पसन्द नहीं आई परन्तु कुछ न कहा और उनको घर जाने की आज्ञा दे कर बनियों को ठहरा लिया और मुसाहिबों से फ़रमाया कि आज हम इस न्याय को करके ही थाल अरोगेंगे (भोजन करेंगे)। ये बेचारे कब से ख़राब हो रहे हैं और न्याय नहीं होता। ऐसा क्या मुश्किल है; लाओ वहियाँ हमको दो और तुम भी देखो। बात तो इतनी सी ही है कि यह रुपया किसके पास रहा और किसकी वही सच्ची है। पहले पाली वाले की वही देखी। जिन पत्रों में रुपया देने का लेखा लिखा था उनको बार बार देखा और जाँचा। फिर जोधपुर वाले की वही देखी और उसके पत्रों की भी जाँच की। दोनों बहियाँ एक क़लम और एक के हाथ की लिखी हुई थीं। देखने में संदेह करने की कोई बात नज़र नहीं

आती थी, परन्तु महाराजा साहिब ने देखते देखते जवाहरख़ाने से काँटा मँगाया और पाली वाले की बही खुलवा कर उन पत्रों को, जिनमें जोधपुर वाले को रुपया देने का हिसाब लिखा था, एक एक करके बाक़ी पत्रों से तुलवाया तो सब पत्रे तोल में बराबर उतरे परन्तु जोधपुर वाले की बही के वे पत्रे, जो उस संवत्, महीने और मिती के हिसाब के थे, जिस महीने और मिती में पाली वाले ने उसको रुपया देना लिखा था, अपनी बही के दूसरे पत्रों से कम ज़्यादा निकले। अर्थात् दूसरे पत्रों के बराबर नहीं हुए। महाराजा साहिब ने उन पत्रों को पकड़ा और जोधपुर वाले बनिये से पूछा कि बही भर में यही पत्रे इस साल महीने और मिती के तोल में दूसरे पत्रों के बराबर क्यों नहीं हैं? जैसे कि पाली वाले की बही के हैं। जब वह कुछ ठीक जवाब न देसका तो महाराजा साहिब ने फ़रमाया कि पालीवाला सच्चा है और यह झूठा है। क्योंकि इसने बेईमानी से असली पत्रे, जिनमें इसके हिसाब का जमा-ख़र्च था, पीछे से निकाल डाले हैं और दूसरे पत्रे लिख कर उनकी जगह बही में डाल दिये हैं जैसे कि हम सुनते आये हैं कि बनिये जब बेईमानी करते हैं तो बही में दूसरे पत्रे लिख कर डाल देते हैं। और फिर कहने लगते हैं कि हमारी बही में जमा-ख़र्च नहीं है। वही बात आज प्रत्यक्ष देखने में आई। अब इसको अदालत में ले जाओ और फैसला करादो। महाराजा साहिब के इस न्याय की बड़ी तारीफ़ हुई और बनियों ने आपस में राज़ीनामा कर लिया और महाराजा ने भी क़सूर माफ़ कर दिया क्योंकि अगले राजा न्याई भी थे और दयालु भी।

(२)

एक परदेशी घड़ीसाज़ महाराजा तख़तसिंह जी के तोशेख़ाने में चोरी करता हुआ पकड़ा गया। महाराजा ने मुसाहिबों को बुलाकर पूछा कि इसको क्या सज़ा देना चाहिए। मुसाहिबों ने सलाह करके अर्ज़ की कि इसने नमक-पानी खा कर भी ऐसी नमकहरामी की है। इसलिए हमारी समझ में तो इसके वास्ते यह सज़ा ऊचती है कि इसके हाथ कटवा दिये जायँ जो उमर भर याद रक्खे और फिर ऐसा काम न करे।

महाराजा साहिब—तुमने ठीक अरज़ की। चोर को ऐसा ही दंड मिलना चाहिए पर इस समय तो हमको और तुमको इस पर ग़ुस्सा आ रहा है जिससे इसके हाथ कटवा देना कोई बड़ी बात नहीं है। परन्तु जब ग़ुस्सा उतर जायगा और इसके कटे हुए हाथ देख

कर करुणा आयगी तो क्या उस समय इसके हाथ फिर जुड़ सकेंगे ?

मुसाहिब—फिर से हाथ जोड़ना किसके हाथ है, परमेश्वर ही जोड़े तो जुड़ सकें।

महाराजा साहिब—जब हाथ जोड़ना अपने हाथ में नहीं है तो इस पर अभी से क्यों न दया करनी चाहिए।

मुसाहिब—हज़ूर तो छोटे परमेश्वर हैं, सच फ़रमाते हैं। दया और करुणा करना हज़ूर को ही फबता है, पर क़सूर की कुछ सज़ा तो होनी ही चाहिए।

महाराजा साहिब—इसने चोरी ज़रूर की। पर अपना कुछ माल नहीं गया। जहाँ का तहाँ रहा, इसलिए इसकी यही सज़ा है कि इसको मारवाड़ से निकाल दो और चढ़ा हुआ रोज़गार दे दो। नौकर को इसके सिवा और क्या सज़ा होगी। क्योंकि मुरदे को तो बैठ कर रोते हैं और रोज़गार को खड़े खड़े रोते हैं ?

मुसाहिब—धनियों को ऐसा ही धनियाप चाहिए जिसमें ग़रीबों का निवाह होता रहे।

फिर महाराजा साहिब ने घड़ीसाज़ को बुलाकर कहा कि हमने मुसाहिबों की अर्ज़ से तुम्हारा क़सूर माफ़ किया। ख़ज़ाने में जा कर अपना रोज़गार लेलो और अपने घर चले जाओ।

वह इस गुनाहबख़शी का आदाब बजा लाकर दुआएँ देता हुआ चला गया।

महाराजा जसवंतसिंहजी।

महाराजा जसवंतसिंहजी के मरजी-दानों (कृपा-पात्र चाकरों) का जोधपुर में एक बड़ा दल था, जिसमें भैया फ़यज़ुल्लाहख़ाँ, रिसालदार वज़ीरअली, फ़ैयाज़अली, भाटी बिशनजी और मानकजी फ़ारसी जैसे बड़े बड़े आदमी शामिल थे, और कुछ आदमी छोटी जातियों के भी थे। उनमें से एक चिमना खटिक भी था, जिसको एक गाँव जागीर में मिला हुआ था, उसके पड़ोस में एक नाई* रहता था। उसका बेटा लालू उसके घर में आता जाता था, परन्तु नाई मना किया करता था। इस पर एक दिन उसने शराब पी कर उस नाई

* नाई का नाम चुन्नीलाल था।

को जँबिये से मार डाला और महाराजा साहिब के पास जा कर कहा कि मा-बाप आज तो मैं मिनख (मनुष्य) मार कर आया हूँ ।

महाराजा साहिब—किस मनुष्य को मार कर आया है ?

लालू—नाई को ।

महाराजा साहिब—क्यों ?

लालू—मा-बाप, वह मुझे अपने घर नहीं आने देता था ।

महाराजा साहिब—तू उसके घर क्यों जाता था ?

लालू—उसकी जोरू बुलाती थी ।

महाराजा साहिब—फिर अब तू क्या चाहता है ?

लालू—अन्नदाता जी के क़दमों में रहना चाहता हूँ, जिसमें मुझे कोई पकड़ न सके ।

महाराजा साहिब—अच्छा तू प्रतापसिंहजी भाई के पास जा, वे बंदोबस्त कर देंगे ।

यह फ़रमा कर हज़ूर ने उसको महाराज प्रतापसिंहजी के पास भेज दिया । महाराज ने सब हाल सुनने के पीछे उसको बेड़ी पहना कर फ़ौजदारी अदालत में चालान किया । वहाँ तहक़ीक़ात में जुर्म-क़तल-अमद साबित हो कर फाँसी का हुक्म हुआ । मरज़ी-दानों ने उसके बचाने के लिए बहुत दौड़-धूप की और उसकी औरत और मा को राज़ीनामा कर देने के वास्ते बहुत सा रुपया भी देना किया और महाराजा साहिब से भी अर्ज़ की कि जब तक राज़ीनामा हो फाँसी न होना चाहिए । इस तरह तीन बरस तक फाँसी रुकी रही । अखीर में लालू के घरवालों ने तीन हज़ार रुपये नाई के घर पहुँचा कर औरतों को राज़ीनामा देने के लिए बहुत तंग किया । नाई की औरत तो राज़ी होगई थी, मा राज़ी नहीं थी, परन्तु लोगों के दबाव से बोली कि अच्छा अपनी बिरादरी वालों से पूछ आऊँ, यह कह कर घर से निकली और सीधी राई के बाग गई, जहाँ महाराजा साहिब विराजते थे । महाराजा साहिब ने पूछा—तू क्यों आई ? वह रो कर बोली कि मेरा ही तो बेटा मारा गया है और मुझको ही दबाते हैं कि तीन हज़ार ले ले और राज़ीनामा करदे ।

महाराजा साहिब—फिर तू क्या चाहती है ?

नाइन—मैं रुपया नहीं चाहती, अपराधी को फाँसी हो यह चाहती हूँ ।

महाराजा साहिब—अच्छा, प्रतापसिंहजी भाई के पास जा।

नाइन—महाराज प्रतापसिंहजी के पास गई और बोली कि हज़ूर ने मुझे आप के पास भेजा है।

महाराज—तू हज़ूर में क्यों गई थी?

नाइन—इसलिए गई थी कि हत्यारे के घर वाले मुझे तीन हज़ार रुपये देते हैं और राज़ीनामा करने को दबाते हैं, मगर मैं तो रुपये नहीं चाहती। ख़ून के बदले ख़ून चाहती हूँ। इसलिए मेरे बेटे के बदले उस हत्यारे को फाँसी हो जानी चाहिए।

महाराज—अच्छा! हो जावेगी।

नाइन ने घर आ कर रुपये फेर दिये और कुछ न कहा। वे लोग उसकी इच्छा ज़ियादा रुपये लेने की जान कर पाँच हज़ार रुपये का बंदोबस्त करने लगे, उधर महाराज प्रतापसिंहजी ने हज़ूर से पूछ कर फ़ौजदारी अदालत में लिख भेजा कि पहले जो हुक्म सज़ा का हज़ूर की मंज़ूरी से हो चुका है उसकी तामील हो जाना चाहिए। तीसरे दिन ही लालू को फाँसी होगई। नाई की माँ ने सुन कर कहा कि अब मैंने अपना इन्साफ़ भर पाया। उस की उम्मेद मरज़ी-दानों के दल-बल से मुझ ग़रीबनी को नहीं रही थी।

सिंगी जोधराज दीवान।

जोधपुर के महाराजा श्रीभीमसिंहजी का दीवान सिंगी जोधराज बड़ा न्यायी था। एक बार उसके पास भानजे की यह पुकार आई कि उसने उदड़ा (तलब) निकाल कर एक गाँव वालों से २० रुपये मँगा लिये हैं। सिंगी ने उसी दम हुक्म दिया कि उसको पकड़ लावें। मगर सिपाहियों ने लिहाज़ से पकड़ा तो नहीं और कहा कि आपको बुलाया है, चलो। वह घोड़े पर चढ़ कर उनके साथ हो गया। सिंगी छत पर से उसको इस तरह आता हुआ देख कर और भी चिड़ा और बोला कि कुत्ता, अन्याय करके घोड़े पर चढ़ा आता है और चार आदमियों को भेजा कि उसे घोड़े पर से गिरा कर जूते मारते लावें। जब वे इसी तरह से उसको लाये तो मुद्दईयों के बराबर उसे खड़ा करके पूछ-ताछ की और क़ुसूर साबित होजाने पर उससे वह रक़म उनको वापस दिला दी और फिर उसे भी बरतर्फ़ कर दिया।

शेरजी कोतवाल, जोधपुर ।

श्रीमाली ब्राह्मण वोहरा रूपराम जोधपुर दरबार का वेदिया (कर्मकांडी) था, उसके तीन बेटे कस्तूरचंद, कृपाकिशन और नाना थे और एक भाई गिरधारी था, उस से और कृपाकिशन से अनबन हो गई थी, जिस पर वह कृपाकिशन को मारना चाहता था। कृपाकिशन जहाँ सोया करता था वहाँ एक रात गिरधारी तलवार ले कर गया। कृपाकिशन तो बाहर चला गया था और उसकी जगह छोटा भाई नाना सोता था। गिरधारी ने उसी को कृपाकिशन समझ कर मार डाला। परंतु जब देखा कि वह तो नाना है तो बहुत घबराया और उसी क्षण पदमसर तालाब में, जो उसके घर से मिला हुआ था, जा कर अपने कपड़ों का ख़ून धोया और फिर भतीजे के पास बैठ कर रोने और चिल्लाने लगा कि मेरे घर में चोर आये वे नाना को मार गये। कोतवाली में भी ख़बर पहुँची। शेर जी कोतवाल ने आ कर इधर उधर चोरों को बहुत ढूँढ़ा, पर कुछ पता न लगा और न उसके लड़के का चोरों के हाथ से मारा जाना उसकी समझ में आया। तब उसने कहा कि मुझे तो गिरधारी के सिवा और कोई आदमी मारने वाला मालूम नहीं होता। परंतु वह राज्य का वेदिया था इसलिए यकायक बिना सबूत उसको पकड़ भी नहीं सकता था। मोहल्ले के बड़े बड़े आदमी और राज्य के दूसरे जोशी वेदिये भी कहते थे कि भला ऐसा कहीं हो सकता है कि सगा काका अपने भतीजे को यों मार डाले और फिर श्रीमाली ब्राह्मण हो कर ऐसी हत्या करे! परंतु शेर जी अपने मत पर जमा रहा और गिरधारी को बाहर बुलाया तो वह झुंझला कर बोला कि बाहर कैसे आऊँ; अपने भतीजे के पास बैठा हूँ, जो मरा पड़ा है। तुम चोरों को चावा (प्रकट) करो; मुझ से क्या कहते हो? शेरजी ने कहा कि एक बात सुन जाओ। गिरधारी को जाना पड़ा। शेरजी ने छूटते ही यह पूछा कि चांपावत*, तुम्हारा खांडा कहाँ है? ज़रा मुझे तो

* गिरधारी पुराने ज़माने की चाल के अनुसार शस्त्र बांधता था और राजपूतों के वेष में रहता था, इसलिए लोग उसको चांपावत राठोड़ कहते थे और वह भी इस पदवी से बहुत राज़ी होता था।

दिखाओ। यह सुनते ही उसका मुँह उतर गया। क्योंकि उसने उसी खांडे से भतीजे को मारा था और घबराहट में धोना भूल गया था, मगर अब क्या हो सकता था। कहना पड़ा कि खांडा तो ऊपर रक्खा है। शेरजी ने मँगाकर देखा तो वह ख़ून से भरा था और दूसरे श्रीमाली ब्राह्मणों को भी, जो उसके पक्षपाती थे, दिखा कर कहा कि यदि काका ने भतीजे को नहीं मारा तो यह ख़ून काका के इस खांडे में कहां से आया और किसका आया? वे लोग भी चुप हो गये और गिरधारी भी सब बोल गया। तब शेरजी उसको पकड़ ले गया और महाराजा श्रीतख़तसिंहजी से सब हाल अर्ज़ किया। महाराजा साहिब ने, जो दयालु होने से कभी किसी ख़ूनी के मारने का हुक्म नहीं देते थे, उसको उम्र भर के वास्ते भाकसी (काल कोठरी) में डलवा दिया जहां से वह मर कर छूटा और उसका वेदिया पद दूसरे को दे दिया।

जोसी गंगाविशन।

संवत् १९१४ के ग़दर में पाली के एक व्यापारी ने बम्बई से कुछ दागीना (कपड़ा) और दो टूटे फूटे पुराने कूड़ियों (कुप्पों) में मोहरें भरकर अपने गुमाश्ते और रोकड़िये के साथ पाली को भेजी थीं, रास्ते में गाड़ी लुट गई, मगर कूड़िये बच गये, क्योंकि लुटेरों ने उनको रद्दी समझ कर फेंक दिया था। गुमाश्ते और रोकड़िये के सिवा और कोई जानता भी नहीं था कि इन में क्या है? उन्होंने कूड़ियों को उठाकर छिपा लिया और व्यापारी को लिख भेजा कि सारा माल लुट गया। वह भी सब्र कर बैठ गया।

जब लूट की बात ठंडी पड़ गई तो गुमाश्ते और रोकड़िये ने सलाह करके बहुत ही सावधानी से कूड़ियों में की मोहरें निकाल कर आधों-आध बांट लीं, परन्तु एक मोहर बढ़ी। उसके बाँटने पर उनमें झगड़ा हुआ। गुमाश्ता तो कहता था कि मैं अफ़सर हूँ, यह मोहर मैं लूँगा और रोकड़िया कहता था कि इस बटवारे में अफ़सर और बे अफ़सर का कुछ काम नहीं, बराबर बाँट लो। इसलिए आधी मोहर मैं नहीं छोडूँगा। यह बात बाहर एक आदमी ने सुन पाई और तुरंत कचहरी में जा कर मुख़बरी करदी। उन दिनों जोसी गंगाबिशन वहां के हाकिम थे, जो बड़े भले आदमी थे। उन्होंने सिपाही भेज कर उन दोनों को बुलवाया और इशारे से पूछा कि क्या बात है? उन्हीं

ने डरके मारे जोसीजी को अलग ले जा कर वह सब हाल सच सच कह दिया और मोहरें भी ला कर उनके आगे रख दीं। जोसीजी ने उन से ही अपने कस्मल में बँधवाईं और गढ़ा खुदाकर उसमें गड़वादीं। ऊपर अपनी गद्दी बिछा ली। फिर दैव-योग से मुख़बिर भी मर गया और अब कोई आदमी उस भेद को जानने वाला नहीं रहा। चार छः महीने पीछे जोसीजी ने अपने बड़े भाई हंसराज को, जो मुल्क के बंदोबस्त के लिए फ़ौज सहित दौरा किया करते थे, गद्दी हटा कर वे मोहरें दिखाईं। उन्हों ने त्योरी चढ़ाकर कहा कि इतनी मोहरें कहाँ से आईं? रिशवत में लीं, या राज्य के ख़ज़ाने से चुराईं। गंगाबिशन ने कहा कि न रिशवत ली, न चोरी की। एक व्यापारी की अमानत है, और वह सब हाल कह दिया। जोशी हंसराज ने कहा कि जब अमानत हैं तो क्यों रख छोड़ी हैं? गंगाबिशन ने कहा कि आप से पूछने के वास्ते। जोसी हंसराज ने कहा कि मुझ से पूछना क्या है? जिसकी हैं उसको दे दो। नहीं तो इस लोक और परलोक में काला मुँह होगा। गंगाबिशन ने उस व्यापारी से कहलाया कि तुम्हारी चोरी का कुछ पता लगा है। यह सुन कर वह बम्बई से आया और कुछ सोगातें (भेट) भी उनके लिए लाया। मगर उन्होंने सिवा एक नास-दानी के, जो बहुत ही घटिया मोल की थी, कुछ नहीं लिया और कहा कि तुम्हारे गुमाश्ते और रोकड़िये की खेवट से मोहरें मिल गईं हैं, वे तुम ले जाओ। मगर १०१) रुपये दरबार के नज़राने के और कुछ इनाम इनको भी देना होगा। वह बोला कि मैं तो इन मोहरों के मिलने की उम्मेद ही छोड़ बैठा था। परन्तु आप से न्याई और नेकनियत हाकिम हो और यह भनक मेरे कान में पड़े। अब जितनी आप चाहें ले लें और जितनी जिसको दिलाना हो दिलादें। बाक़ी बचेंगी वह मैं ले जाऊँगा। मगर जोसीजी ने अपने वास्ते तो कुछ न लिया, १०१) रुपया दरबार के नज़राने के ले कर और पाँच पाँच सौ रुपये गुमाश्ते और रोकड़िये को दिला कर वे सब मोहरें उसको देदीं और रसीद कराली।

उमरख़लीफ़ा ।

(१)

उमरख़लीफ़ा मदीने में मिट्टी की दीवार बना रहे थे, उस समय एक यहूदी* ने आ कर कहा कि बसरे के हाकिम ने मुझसे एक लाख रुपये का

* मूसाई ।

माल ख़रीद लिया है, परन्तु मोल नहीं देता है। आपने कहा, काग़ज़ ला; मैं हुक्म लिख दूँ। उसने कहा मेरे पास नहीं है। तब आपने एक ठीकरी उठाकर उस पर हाकिम को लिखा कि तेरी शिकायत करनेवाले तो बहुत हैं। और शुक्र करनेवाला कोई नहीं है। तू या तो शिकायत की बातों से बच, या हुकूमत की गद्दी से उठ। और नीचे न अपना नाम लिखा न मोहर लगाई, न लंबी चौड़ी लकीरें दस्तख़त की कीं, परन्तु उनके न्याय और दंडनीति की धाक लोगों के दिलों में ऐसी बैठी हुई थी कि जब यहूदी उस ठीकरी को ले कर हाकिम के पास गया तो वह घोड़े पर सवार था, ठीकरी को देखते ही घोड़े से उतर पड़ा; झुक कर सलाम किया और वहीं खड़े खड़े यहूदी को माल का मोल मँगा दिया जो घोड़े से भी नहीं उतरा था *

ख़लीफ़ा मोतजिदबिल्लाह।

(२)

एक सिपाही ने किसी किसान के बाग़ से ज़बरदस्ती कुछ अंगूर तोड़ लिये थे। जब इस ज़ुल्म की ख़बर मोतज़िद ख़लीफ़ा को पहुँची तो पूछा कि वह सिपाही किस के ख़ैल (रिसाले) में से है? जब पता लग गया तो हुक्म दिया कि उस सिपाही को उसके अमीर (अफ़सर) समेत मार डालें।

वज़ीरों ने अर्ज़ की कि, हे मुसलमानों के अमीर! उसका क्या गुनाह है? ख़लीफ़ा ने कहा कि जो वह अपने सिपाहियों को ऐसा करने से डाँटता रहता, तो आज इस सिपाही से ऐसा ज़ुल्म नहीं होता, परन्तु जो उसने

---

* औरंगज़ेब बादशाह भी उमरख़लीफ़ा के समान थोड़े अक्षरों में हुक्म लिखा करते थे और जो कोई थोड़े अक्षरों में बहुत सा मतलब लिख देता था उससे ख़ुश होते थे। एक रोज़ बड़े शाहज़ादे मोहम्मद मोअज़्ज़म पर दक्षिण से बहुत से फ़र्यादी आये। उस समय दफ़्तर में सिवा एक उम्मेदवार मुंशी के कोई न था, आपने उसीको बुला कर फ़रमाया कि मोअज़्ज़म को हुक्म लिख दो। मुंशी ने आपकी त्योरी चढ़ी हुई देख कर झट पट यह हुक्म लिखा कि हकूमत पनाह! तुझसे दुनिया दुखी है, या उनका दुख दूर कर या गद्दी से उठ। और दस्तख़त करने के लिए आगे किया। आपने दस्तख़त करके फ़र्यादियों को दिया और मुंशी का नाम पूछ लिया। कुछ देर बाद जब वज़ीर आया तो फ़रमाया कि यह कायस्थ-बच्चा भी कुछ मुख़्तसर लिख जानता है। वज़ीर ने आदाब बजा कर उसको अपने मुंशियों में रख लिया, जो थोड़े ही दिनों में मुंशी माधोराम के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

कभी ऐसा नहीं किया तो वह भी इस अपराध में शामिल है। दूसरे इसी अमीर ने मेरे चाचा के राज्य में एक .खून नाहक़ किया था और मैंने प्रतिज्ञा की थी कि जो मेरा बस चला तो मैं इसको दंड दूँगा। अब .खुदा ने यह बनाव बना दिया और मेरी प्रतिज्ञा पूरी कर दी।

(३)

इसी ख़लीफ़ा के राज्य में एक व्यापारी का किसी अमीर पर बहुत रुपया चढ़ गया था। वह उसको नहीं देता था। व्यापारी ने कई बार ख़लीफ़ा की ड्योढ़ी पर पुकार की और अमीरों वज़ीरों से भी बहुत सा कहलाया; परन्तु कुछ न हुआ। जब वह सब तरफ़ से निराश हो गया, तब एक दिन किसी ने उससे कहा कि मैं एक ऐसा आदमी बताऊँ जिससे तेरा सारा रुपया पट जाय और तू किसी की सहायता लेने का मुहताज न रहे, यह कह कर वह व्यापारी को एक शेख़ (बूढ़े आदमी) के पास ले गया जो एक मसजिद में बैठा हुआ कपड़ा सीता था और .कुरान पढ़ता जाता था। वह महात्मा व्यापारी का हाल सुनते ही उठा और उस अमीर के घर गया। अमीर ख़बर पाते ही बड़े आदर से मिला और बोला, मैं कपड़े नहीं उतारूँगा जब तक कि आप न कहेंगे कि क्या काम है? शेख़ ने कहा कि इसे अभी रुपया देदो और इसका दुख मिटा दो।

अमीर ने सौगंद खाकर कहा कि अभी तो ५००० अशरफ़ी से ज़ियादा मेरे पास नहीं हैं, वे तो देता हूँ और बाक़ी एक महीने में न दे दूँ तो यही व्यापारी मेरी जायदाद बेच देने का मुख़तार है। यह कह कर उसने पाँच हज़ार अशरफ़ियाँ गिनदीं। व्यापारी ने लेलीं, और मसजिद में आ कर शेख़ के आगे रख दीं, और कहा कि शेख़जी मुझे तो इस रक़म के मिलने की कुछ आशा ही नहीं रही थी, क्योंकि सब अमीर वज़ीर मेरी सिफ़ारिश कर के थक गये थे, पर कुछ नहीं पटा था; परन्तु आज आपके दम और क़दम की बरकत से मैंने अपना माल भर पाया। अब जितना आपका जी चाहे इसमें से ले लीजिए। शेख़ ने कहा कि मैंने जो तेरे साथ भलाई की है, क्या तू उसका बदला देता है, और मुझे लोभी समझता है। तू अपना माल ले जा। .खुदा तुझे बरकत दे। मुझे इसकी कुछ हाजत नहीं है। व्यापारी ने कहा, अच्छा शेख़ जी। भला यह तो मुझ से कह दो कि ऐसी बात क्या थी कि जिससे अमीर ने किसी की भी बात मेरे वास्ते नहीं सुनी

थी यों आपका हुक्म मान लिया। शेख़ ने कहा, तेरा काम बन गया। अब इससे ज़ियादा मुझ से काम न रख। परन्तु व्यापारी ने नहीं माना; और बहुत सा कहना सुनना किया तो शेख़ ने कहा कि ४० बरस से मैं इस मसजिद में बांग पुकारता हूँ और अपना निर्वाह दरज़ीपने से करता हूँ। एक दिन शाम को नमाज़ पढ़ कर घर जाता था, एक गली में क्या देखता हूँ कि एक मतवाला तुर्क एक .खूबसूरत औरत का हाथ पकड़े खड़ा है और उसे अपने घर लेजाना चाहता है। वह औरत रोती है और चिल्ला चिल्ला कर कहती है कि मेरे ख़ावंद ने मुझे सौगंद खिला रक्खी है कि कभी रात को घर से बाहर न रहना नहीं तो तुझे तलाक़ देदूँगा।

मैंने तुर्क से कहा कि तू इसको छोड़ दे; मगर उसने मेरा सिर तोड़ दिया और औरत को अपने घर ले चला। मैं कई आदमियों को ले कर उसके घर गया कि शायद औरत को छोड़ दे परन्तु जब उसने अपने .गुलामों के साथ घर से निकल कर उन लोगों को ललकारा तो सब भाग गये और मुझे पकड़ कर इतना पीटा कि मैं बेहोश होकर गिर पड़ा। मेरे साथी आये और मुझे उठा कर घर ले गये। आधी रात को मैं होश में आया लेकिन दीन की हिमायत और .गैरत से मुझे कल न पड़ी और न नींद आई तब मैंने अपने जी में कहा कि तुर्क मस्त है और उसे वक्त़ की पहचान भी नहीं है। मैं उठूँ और बांग पुकारूँ शायद वह दिन निकल आने के भ्रम से उस औरत को छोड़ दे। मैं यह सोचकर बड़ी मुशकिलों से मसजिद में गया और बाँग देकर यह विचार करने लगा कि अब वह औरत उसके घर से निकल आवे तो ठीक नहीं तो दूसरी बाँग नींद से उठने की दूँ जिस से तड़का हो जाने का यक़ीन हो जावे और तुर्क उस औरत का पीछा छोड़े। अचानक क्या देखता हूँ कि वह रास्ता सवारों और पैदलों से भर गया है। वे पूछते हैं कि यह बांग किसने कही है। मैंने कहा कि मैंने कही है। उन्होंने मुझे मसजिद से उतारा। मैं बड़े ड्योढ़ीदार को देखकर, जो राज्य का मुख़्तार था, .खुश हुआ। वह मुझे ख़लीफ़ा के पास ले गया। ख़लीफ़ा ने मुझसे कहा कि तुझे क्या हुआ है जो बे वक्त़ अज़ाँ कह कर आदमियों को दिक़ करता है जिस से माँगने वाले तो बाहर निकल आवें और रोज़ा (व्रत) रखने वाले वक्त़ पर खा-पी न सकें और कोतवाल गश्त छोड़ दें।

मैंने कहा कि हे मुसलमानों के अमीर ! जो तू अपने ग़ज़ब से मुझे अमन दे दे तो मैं अरज़ करूँ । ख़लीफ़ा ने कहा—डर मत, कह । मैंने सब हाल कह दिया । ख़लीफ़ा ने ड्योढ़ीदार से कहा कि अभी जा कर उस औरत और तुर्क को लेआ । वह ले आया । मोतज़िद ने औरत से पूछा तो उसने भी वही कहा जो मैंने कहा था । ख़लीफ़ा ने ड्योढ़ीदार से कहा कि इसे किसी भले आदमी के साथ इसके ख़ाविन्द के पास पहुँचा कर मेरी ज़बान से कहला दे कि इसको मारे पीटे नहीं बल्कि इससे भलाई करे; क्योंकि यह बेगुनाह है और एक हज़ार (मुहरें) भी उसको दीं ।

फिर तुर्क को बुला कर कहा कि तू इतनी धन-संपत्ति पा करभी नहीं अघाया जो पाप करने को दौड़ता है । लोगों की औरतों को ख़राब करता है । मेरी और शरीअत (धर्म) की मान-मर्यादा को घटाता है और जो कोई तुझे सच्ची बात कहता है तो उसको पीटता है । यह कह कर फ़र्राशों को हुक्म दिया । उन्होंने उसको एक बोरे में डाल कर मारे मेख़ों के उसका चूर चूर कर डाला और दजले (नदी) में फेंक दिया । फिर मुझ से कहा—हे शेख़ ! आज से तू जहाँ कहीं पाप होता देखे उसे रोक और जो कोई तेरा कहना न माने तो उसी वक़्त बाँग पुकार दे । बस मेरे तेरे बीचमें यही डाँक है ।

उसी दिन से सब लोग मेरे हुक्म में हो गये हैं और कोई मेरे कहने को नहीं टालता ।

सुलतान महमूद ग़ज़नवी

(१)

सिना-प्रांत के हाकिम ने एक सौदागर का माल छीन लिया था । वह सुलतान महमूद के पास फ़रयाद करने को आया । सुलतान ने अपनी मोहर छाप कर परवाना हाकिम के नाम उसका माल लौटा देने के लिए लिख दिया, परन्तु हाकिम ने न माना और उस पर ख़फ़ा भी हुआ । तब वह सुलतान के पास फिर आया और अपना हाल कहने लगा । सुलतान उस समय किसी बात पर चिढ़ा हुआ बैठा था । सौदागर से झुंझला कर बोला कि जो वह नहीं देता तो मैं क्या करूँ ? सौदागर ने कहा कि जब बादशाह ही कुछ नहीं कर सकता तो फिर मैं क्या

करूँ ? सुलतान ने कहा कि अपने सिर पर धूल डाल और चला जा। उसने अर्ज़ की कि ठीक है, ऐसे राज्य में जहाँ बादशाह का हुक्म नौकर चाकर ही नहीं मानें, फ़रियादी के सिर पर धूल डालने के सिवा और उपाय ही क्या है ? महमूद इस बात के सुनने से पसीज गया और बोला कि मैंने बुरा किया, जो तुझसे ऐसा कहा। धूल तो मुझको अपने सिर पर डालना चाहिए।

यह कह कर उसी वक़्त उस हाकिम को पकड़ लाने का हुक्म दिया। कुछ दिन पीछे जो वह आया तो वही परवाना उसके गले से बाँधा और उसे गधे पर सवार करा करके शहर में फिराया और फिर सौदागर का माल दिला कर उस हाकिम को मरवा डाला।

(२)

एक आदमी परदेश जाते हुए मोहरों की भरी थैली क़ाज़ी को सौंप गया। लौट कर उसने माँगी तो क़ाज़ी ने जैसी थी वैसी दे दी, परन्तु जब घर जाकर उसने खोली तो मोहरों की जगह रुपये निकले। उसने आकर क़ाज़ी से कहा। क़ाज़ी बोला कि तू जैसी सिली हुई और चपड़ी लगी हुई थैली मुझे सौंप गया था वैसीही मैंने तुझे लौटा दी। फिर अब क्या कहता है ? यह सुन कर उसने सुलतान महमूद से फ़रियाद की। सुलतान ने कहा—तू अब किसी से यह बात मत कहना। मैं तेरी मोहरों का पता तीन दिन में लगा दूंगा यह कह कर सुलतान ने उसे तो विदा किया और आप रात होने पर गद्दी का कोना काट कर शिकार को चल दिया। तड़के ही फ़र्राश झाड़ू देने आया तो गद्दी का कोना कटा देख कर घबराया और बादशाह के कोप से डर कर एक उस्ताद रफ़ूगर को ढूँढ़ लाया और उससे वह कोना गद्दी का रफ़ू करा कर निश्चिन्त हो गया।

रात को बादशाह शिकार से लौट आया और फ़र्राश से कहने लगा कि मैं तो कोना काट गया था अब दुरुस्त कैसे हो गया ? उसने अर्ज़ की कि मुझे यह हाल तो मालूम न था ; कोना कटा देख कर मैं अपने दिल में डरा कि कहीं हज़ूर मुझको ही इस क़ुसूर में न पकड़ें, इस लिए मैंने इसको रफ़ू करा दिया है। बादशाह ने कहा कि जिस रफ़ूगर ने ऐसा बे-मालूम रफ़ू किया है उसे तो मैं भी देखना चाहता हूँ। वह बड़ा उस्ताद मालूम होता है। मुझे भी उससे कुछ रफ़ू कराना है। फ़र्राश

जाकर उसको बुला लाया । बादशाह ने पूछा कि यह कोना तू ने रफ़ू किया है ? वह बोला—हाँ हु.ज़ूर । बादशाह ने कहा—मुझे कैसे यक़ीन हो । तूने और भी कहीं ऐसा रफ़ू किया है ? वह बोला—हाँ हु.ज़ूर क़ाज़ी की एक थैली इसी साल में रफ़ू की है । बादशाह ने वह थैली दिखा कर पूछा कि क्या यही थैली रफ़ू की थी ? इसमें क्या था ? रफ़ूगर ने कहा—हु.ज़ूर मोहरें थीं ।

बादशाह ने क़ाज़ी को बुला कर रफ़ूगर से थैली रफ़ू कराने का हाल रफ़ूगर के सामने पूछा और उसी वक़्त उससे एक हज़ार मोहरें मुद्दई को दिला कर ५० हज़ार रुपया जुरमाना किया और शहर से निकाल दिया ।

(३)

एक दिन एक बुढ़िया ने बलोच के पहाड़ से सुलतान महमूद के पास आकर पुकार की कि लुटेरे मेरा और मेरे घर वालों का धन माल लूट ले गये हैं और मुसाफ़िरों के आने जाने का रास्ता भी रोक रक्खा है । सुलतान ने पूछा कि वह पहाड़ कहाँ है ? बुढ़िया ने कहा कि बादशाह को चाहिए कि उतनाही मुल्क अपने अधिकार में रक्खे जिसकी ख़बर वह ले सके और जहाँ ऐसा अंधेर हो कि बादशाह अपने मुल्कों के नाम ही न जाने तो उसके हाल पर अफ़सोस करना चाहिए क्योंकि एक दिन उसका राज्य बिगड़ जायगा और परलोक में उससे जवाब पूछा जावेगा कि प्रजा की सुध क्यों न रक्खी ? इसका कष्ट उसको राज्य छूट जाने के दुख से अधिक होगा ।

सुलतान ने कहा कि तू सच कहती है । उसी समय उसने बहुत से सेब व्यापारियों के ऊँटों पर लदवा कर बुढ़िया के साथ भेजे और ऊँट वालों को ज़हर की दो बोतलें दे कर कहा कि जब वहाँ पहुँचो तो सेबों को ज़हर में डुबो कर छोड़ देना और तुम छिप रहना । उन्होंने ऐसा ही किया । लुटेरे रात को लूटने आये और क़ाफ़िले को लूट कर सेब खाने लगे । थोड़ी देर में ज़हर चढ़ जाने से वे सब मर कर ढेर हो गये और क़ाफ़िले वाले चोरों के पास का सामान बुढ़िया को दे कर उसके घर पहुँचा आये ।

सुलतान मलिक शाह सलजूकी

मलिक शाह के राज्य में एक बुढ़िया का गुज़ारा एक बकरी के दूध से होता था। वह एक दिन उस को जंगल में चराने ले गई। पुल पर से निकली तो बकरी का पाँव पुल की एक दरार में पड़ कर टूट गया। बुढ़िया वहीं बैठ गई और रोने लगी। अचानक सुलतान भी उस पुल पर आ निकला। बुढ़िया दोनों हाथों से उसके घोड़े की बाग पकड़ कर लटक गई और कहने लगी कि तू मेरी पुकार इस पुल पर सुन ले नहीं तो जब क़यामत (प्रलयकाल) में लाव-लशकर बिना अकेला आवेगा तो मैं पुल सुरात (वैतरणी नदी) पर तेरा पल्ला पकड़ूँगी।

सुलतान ने पूछा—तेरी क्या फ़रियाद है और किस पर है? बुढ़िया ने कहा कि नुक़सान की फ़रियाद है और तुझी पर है। तेरे जैसे बादशाह के राज्य में क्यों ऐसा अंधेर हो रहा है कि जो पुल सब लोगों के चलने फिरने का है उसको ऐसा बेमरम्मत छोड़ दें कि जिसके गढ़े में एक बकरी का पाँव पड़ कर टूट जावे; जो एक बुढ़िया का जीवन का आधार हो। सुलतान यह सुन कर रोया और बोला कि हे बुढ़िया, मेहरबानी कर और मुझे इस पुल पर छोड़ दे। क्योंकि उस पुल पर तुझे जवाब देने की ताक़त मुझ में नहीं है। यह कह कर सुलतान ने एक हज़ार बकरियाँ, जिन में एक भी ज़ुल्म से नहीं लाई गई थी, बुढ़िया को दीं और उसका राज़ीनामा लिया।

अमीर तैमूर

अमीर तैमूर जब रूम को जीत कर लौटे थे तो रास्ते में ईरान के सूबेदारों और हाकिमों के साथ शीराज़ का हाकिम क़ुतुबुद्दीन क़ुमी भी सलाम करने को आया था। उसने फ़ारस के लोगों पर जो ज़ुल्म किये थे वे अमीर को पहले से मालूम हो गये थे इसलिए उसको देखते ही हुक्म दिया कि इसे क़ैदियों के कपड़े पहना कर नायब समेत शीराज़ में ले जावें और जिस जिस का माल इसने छीना है उसको दिलादें और नायब को फाँसी देदें क्योंकि इसके ज़ुल्मों की उससे भी बढ़ कर हाय त्राह मची हुई है।

बादशाही नौकर दोनों को शीराज़ में ले गये। शुक्रवार को जुमा-मसजिद में जब सब लोग नमाज़ पढ़ने को आये थे, मौलाना साईद ने, जो

अमीर के हुक्म से इन क़ैदियों के साथ आया था, सब लोगों को सुना कर कहा कि हे फारसवाले ! .कुतुबुद्दीन ने जो कुछ .जुल्म किया है वह उसी की तरफ़ से था; हज़रत अमीर के हुक्म से नहीं था। यह सुन कर सब लोगों ने अमीर को दुआ दी। फिर जितना कुछ रुपया .कुतुबुद्दीन ने किसानों और बाज़ार वालों पर .ज़ुल्म करके जोड़ा था वह दो महीने में उन सबको पूरा पूरा लौटा कर सरकारी ओहदेदारों, .काज़ियों और मुफ़्तियों के दस्तख़तों से रसीदें लिखा लीं और नायब को फांसी दे दी।

अबू सईद मिरज़ा

(१)

ये जब किसी को हाकिम बना कर कहीं भेजते थे तो उसको अपने पास बुला कर काम करने के क़ायदे, जो उस देश की प्रजा और राज्य के फ़ायदे के होते थे, .खूब सिखा और समझा कर विदा करते थे और एक अजनबी आदमी को .खर्च दे कर कहते थे कि तू वहाँ जा और छिप कर इस के कामों को शुरू से लिखता रह और इसके आने से पहले मेरे पास पहुँचा दे। जब वह हाकिम आता और उसका रोज़नामचा उन क़ायदों और उस अजनबी आदमी के रोज़नामचे से मिलता हुआ नहीं होता था तब उसका बुरा हाल किया जाता था। और जो मिल जाता तो कोई बड़ा काम मिलता और दरजा भी बढ़ जाता। इस तरह की जाँच में कई ज़ालिम और .कायदे से काम न करने वाले हाकिम मारे भी गये थे, यह देख कर ओहदेदार लोग जहाँ कहीं जाते थे बादशाह को हाज़िर और नाज़िर समझते थे और नेकी तथा इन्साफ़ के सिवा और कुछ नहीं कर सकते थे।

(२)

एक दिन एक सौदागर ने आ कर कहा कि जो बादशाह के सिवा और कोई न सुने तो मैं एक बात कहूँ। यह सुन कर सब लोग चले गये और उसने कहा कि मैंने रुपयों से भरी हुई एक थैली शहर के क़ाज़ी को सौंपी थी। अब जो मैं माँगता हूँ तो वह इन्कार करता है। गवाह कोई नहीं है। क़सम के सिवा और क्या हो सकता है। लेकिन वह .कसम खाने को भी तैयार है। अब मैं क्या करूँ क्या न करूँ ?

मिरज़ा उसकी सूरत और बातों से जान गये कि वह सच कहता है और कुछ देर चुप लगा कर सोचते रहे कि ऐसा क्या उपाय हो जिससे अधर्म किये बिना इसका रुपया मिल जाय। निदान उससे कहा कि जाओ, जब मैं बुलाऊँ तब आना। यह सुन कर सौदागर तो वहाँ से चला गया और मिरज़ा ने क़ाज़ी को बुला कर अकेले में कहा कि मैंने बाप के मरे पीछे नादारी से बहुत विपत्ति भुगती है, इस लिए बादशाह होने के पीछे आज तक जो कुछ रुपया और जवाहिर अपने बेटों के वास्ते जोड़ा है उसे किसी ईमानदार आदमी को सौंपना चाहता हूँ जो मेरे पीछे उनको मौक़े से दे दे। इस शहर में तुम्हारे सिवा और कोई ऐसा ईमानदार मुझे नज़र नहीं आता। क़ाज़ी ने मंज़ूर कर लिया। मिरज़ा ने कहा—अच्छा किसी ठीक वक्त पर सौंप दूँगा। उसने क़ाज़ी को बिदा करके सौदागर को बुलाया और कहा कि अब जाकर क़ाज़ी से अपना माल माँग लो। अगर वह इनकारी हो तो कहना कि बादशाह के पास जाकर पुकार करता हूँ।

सौदागर क़ाज़ी के पास गया और थैली माँगी। पुकार करने की बात भी उसने कही तो क़ाज़ी ने फ़ौरन घर में जा कर थैली ला दी। वह मिरज़ा के पास लाया और दुआ देकर चला गया।

मिरज़ा ने भी इस बात को वैसे ही अपने मन में रख कर क़ाज़ी से कुछ नहीं कहा और न उसे क़ज़ा (न्याय) के काम से अलग किया।

निदान क़ाज़ी ने ही मिरज़ा के उपाय और धीरज का भेद पा कर ईमानदारी का फिर ऐसा बरताव किया कि जिससे बढ़ कर नहीं हो सकता था।

बादशाह ग़ाज़ान ख़ाँ

(१)

ईरान के बादशाह ग़ाज़ान ख़ाँ के तबेले के दारोग़ा ने एक किसान से घास का भारा ज़बरदस्ती छीन लिया था। उसने बादशाह से फ़रियाद की। बादशाह ने तहक़ीक़ात करके हुक्म दिया कि घास की बागर में आग लगा दें। जब वह जलने लगी तो दारोग़ा को उसमें गिरवा कर जलवा दिया ताकि इस सज़ा को देख कर दूसरे लोग डर जायँ।

(२)

एक दिन बादशाह ग़ाज़ान शिकार में लश्कर से बिछुड़ कर एक खेत की तरफ़ जा निकला, जहाँ एक बुड्ढा और एक बुढ़िया दोनों एक टूटे हुए घर में रहते थे। उन्होंने बादशाह को एक सिपाही जान कर अपने घर में उतार लिया। बादशाह ने उनसे कहा कि आओ आज की रात कुछ बातें करें। वे दोनों उसके पास आकर अदब से खड़े होगये। ग़ाज़ान ख़ाँ ने कहा कि यहाँ का बादशाह कैसा बेढंगा है, जो सिपाहियों को तो अच्छी तरह से रखता है और प्रजा को पीड़ा देता है। बुढ़िया ने कहा, साहब! यह बात छोड़ दो और बादशाह को बुरा मत कहो; जो ग़ाज़ानख़ां का न्याय न होता तो हम दो ग़रीब कभी इस जंगल में आराम से न रह सकते।

बादशाह को बुढ़िया की यह बात सुन कर बड़ा अचंभा हुआ और उस दिन से वह न्याय में अधिक ध्यान देने लगा।

सुलतान अहमद गुजराती।

तवारख़ मिरआत अहमदी में लिखा है कि गुजरात के सुलतान अहमदशाह के जमाई ने जवानी के ज़ोर और बादशाह का जमाई होने के घमंड से एक नाहक़ ख़ून कर डाला था। बादशाह ने उसको बाँध कर क़ाज़ी के पास भेज दिया। जिस आदमी को उसने मारा था क़ाज़ी उसके वारिसों को २०० ऊँटों के लेने पर राज़ी करके सुलतान के पास लाया। सुलतान ने कहा कि यद्यपि ये लोग तो दीत (ख़ून का मोल) लेने पर राज़ी हो गये हैं, परन्तु मैं राज़ी नहीं हूँ। क्योंकि इस काम से दुष्ट धनवान् अपनी धन-संपत्ति के भरोसे पर भूल कर नाहक ख़ून करने लगेंगे। इसलिए यह ख़ून का मोल दिलाने से ख़ून के बदले ख़ून लेनाही अच्छा होगा। यह कह कर जमाई को बाज़ार में फिराकर सूली देदी और उस दिन तथा रात भर लटका रक्खा। दूसरे दिन उतरवा कर गड़वा दिया। इस दंड से उसकी अख़ीर सलतनत तक कोई अमीर या सिपाही नाहक़ ख़ून कर डालने का साहस न कर सका।

(२)

एक दिन यही सुलतान अहमदशाह साबरमती नदी पर अपने महल के झरोखे में बैठा था। पानी में देखा कि काली काली एक चीज़

लुढ़कती चली जाती है। उसको निकलवाया तो वह एक घड़ा था; जिसमें एक आदमी की लाश थी। सुलतान ने सब शहर के कुम्हारों को बुला कर पूछा कि यह घड़ा किसका बनाया हुआ है। एक ने कहा कि मेरा है और मैंने अमुक गाँव के पटेल को बेचा था। वह पटेल भी बुलाया गया और पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि उसने एक बनिये को मार कर इस घड़े में भरा और उसे पानी में छोड़ दिया। सुलतान ने उस पटेल को भी सूली पर चढ़ा दिया। बस येही दो नाहक़ ख़ून उस बादशाह के राज्य में हुए थे।

सुलतान सिकन्दर लोदी।

दिल्ली के बादशाह सुलतान सिकन्दर लोदी की फ़ौज के साथ दो खत्री भाई लड़ने को गये थे, उनमें से एक मारा गया और उसकी लाश घर पर आई। दोनों भाइयों की सूरत बहुत मिलती हुई थी और मुशकिल से छोटा बड़ा पहचाना जाता था, इस लिए दोनों की ही औरतें सती होने को तैयार हुईं और परस्पर झगड़ने लगीं। जिठानी कहती थी कि यह मेरा पति है, मैं इसके साथ सती होऊँगी; देवरानी कहती थी कि तुम्हारा नहीं मेरा पति है; मैं तुमको सती नहीं होने दूँगी, मैं आप सती होऊँगी। इस पर बड़ी गड़बड़ मची। किसी की समझ में कुछ नहीं आता था कि क्या किया जाय, किसको सती होने दिया जाय और किसको न होने दिया जाय। निदान दोनों औरतें लड़ती झगड़ती सुलतान के पास गईं। सुलतान ने कहा कि या तो दूसरे भाई के आने तक सती होना बन्द रक्खो या कोई ऐसा सबूत बताओ जिससे जाना जाय कि यह वास्तव में किस का पति है। यह सुन कर जिठानी ने कहा। हज़ूर मेरा यही सबूत है कि मेरे एक लड़का पैदा हो कर मर गया था, उसका घाव इस लाश के कलेजे पर निकल आवे तो यह मेरे पति की लाश है। वह बेटे की ममता से बहुत दुखी रहा करता था।

सुलतान ने लाश मँगवा कर चिरवाई और कलेजा देखा तो उसमें तीर की भाल के बराबर एक मुरझाया हुआ घाव था। यह देख कर सब लोग अचंभे में रह गये और शोकाकुल होकर कहने लगे कि निःसंदेह बेटे के मरने का घाव ऐसा ही होता है।

बादशाह ने यों निर्धारण करके उस औरत से कहा कि यह तेरा ही ख़ाविंद है। अब तू .खुशी से इसके साथ सती होजा। और उसकी देवरानी से कहा—अभी तेरी और तेरे ख़ाविंद की ज़िंदगी बाक़ी है, तुझे सती होना है तो उसके साथ हो जाना। इस इन्साफ़ से जिठानी पति की लाश के साथ सती हो गई और देवरानी अपने घर आई।

शेरशाह बादशाह।

तवारीख़ फ़रिश्ता में लिखा है कि शेरशाह बादशाह अदालत के महकमे में अपने पराये को एक आँख से देखते थे। कहते हैं कि एक दिन शाहज़ादा आदिलख़ाँ, जो सब भाइयों से बड़ा था, हाथी पर चढ़ा हुआ एक गली से निकलत रहा था। एक बनिये की स्त्री, जिसके घर की भीतें नीची थीं, नंगी नहा रही थी। जब शाहज़ादे की नज़र उस पर पड़ी तो एक पान का बीड़ा उसकी तरफ़ फेंककर और देखता हुआ चला गया। वह स्त्री सत्यवती थी। ग़ैर आदमी ने उसे नंगी देख लिया इस लिए वह मरने को तैयार हुई। बनिये ने उसको रोका और वह पान का बीड़ा लेकर फ़रियादियों में जा बैठा और बादशाह से वह हाल कहा। न्यायी बादशाह ने सुन कर अपने बेटे के हाल पर बहुत अफ़सोस किया और न्याय-नीति की रीति से हुक्म दिया कि इस फ़रियादी बनिये को हाथी पर चढ़ा कर आदिलख़ाँ की जोरू को इसके सामने लावें और यह उसी बीड़े को, जो इसके हाथ में है, उसकी तरफ़ फेंक दे। अमीरों और वज़ीरों ने इस हुक्म के माफ़ रखने को बहुत अर्ज़ विनती की, परन्तु उसने न माना और कहा कि अदालत में मेरे नज़दीक लड़का और प्रजा बराबर हैं। निदान बनिये ने ही अर्ज़ की कि मैं अपने हक़ को पहुँच गया और दावा करने से बाज़ आया।

अकबर बादशाह

(१)

अकबर बादशाह संवत् १६२० में अजमेर जाते थे। रास्ते में एक चीतेवान ने किसी आदमी का जूता अच्छा देख कर छीन लिया। उन दिनों में बादशाह को चीते की शिकार का ज़ियादा शौक़ होने से चीतेवान लोग बहुत ज़ोर में आगये थे। वह आदमी लशकर में पुकारता फिरता था। कहीं बादशाह ने उसकी पुकार सुन ली। उसे बुला कर हाल पूछा और

तहक़ीक़ात की तो उस चीतेवान का ज़ुल्म साबित हो गया और उसके पाँव काट डालने का हुक्म दिया, जिन के शृङ्गार के वास्ते उसने वह अत्याचार किया था। यह हाल देख कर सब बादशाही नौकर डर गये और प्रजा को भी इस इन्साफ़ से तसल्ली हो गई और उसने लशकर के डर से भागना छोड़ दिया।*

(२)

इस समय तक लशकर वाले लड़ाई का बहाना ढूँढ़ा करते थे और कुछ न कुछ बुहतान लगा कर उन लोगों से भी लड़ने लगते थे, जो तावेदार हो जाते थे और उनके जोरू बच्चों को पकड़ कर बेंच देते थे और जब उनसे जवाब पूछा जाता तो हज़ार तरह की बातें बना कर टाल जाते थे। अकबर बादशाह ने इस बात को ना पसंद करके आम हुक्म जारी कर दिया कि आगे को लड़ाई में कोई सिपाही बन्दी न पकड़े जो अक्खड़ लोग ना समझी से लड़ेंगे भी तो वे अपनी सज़ा आप पालेंगे। उनके जोरू बच्चों ने क्या क़ुसूर किया है जो वे पकड़े और बेचे जायँ और न वे लोग लड़ाई के सहायक और साधन हैं इस लिए उनको न पकड़ें और जहाँ कहीं वे अपने बचाव के लिए जाना चाहें जाने दें।

इस हुक्म से बन्दी पकड़ना बन्द हो गया। जब बड़ी बड़ी लड़ाइयों में बन्दी नहीं पकड़े जा सकते थे, तो छोटे झगड़ों में तो, जो सिपाहियों के दोष और लालच से हो जाया करते थे, उसका काम ही क्या रहा। क्योंकि जब बेचना बन्द हो गया और साथ ही उसके लौंडी गुलाम रखने की भी मनाई हो गई तो फिर कौन बन्दी पकड़ कर आफ़त में पड़ता।

(३)

इसी साल में बादशाह सकीट की तरफ़ शिकार खेलने गये। हापा नाम एक ब्राह्मण ने आ कर पुकार की कि अठकीना वाले नाहक़ मेरे बेटे को मार कर माल-असबाब लूट ले गये हैं। ये लोग बड़े डाकू और लुटेरे थे। सकीट के हाकिमों के पास उनके ज़ुल्मों की हमेशा पुकार आया करती थी।

(१) उस समय मुग़ल हिन्दुस्तान में नये नये थे। वे जिधर जाते थे उधर की प्रजा उनके डर से भागने लगती थी।

बादशाह ने कहा कि हम कल आते हैं और दूसरे ही दिन शिकार खेलते हुए उस गाँव की तरफ़ गये तो वे लोग भाग कर गाँव परनका में चले गये। बादशाह ने वहाँ वालों को समझाने के लिए आदमी भेजे तो वे भी लड़ने को तैयार हो गये। तब तो बादशाह ने जाकर उस गाँव को घेर लिया। उस वक़्त इनके साथ २०० आदमी और २०० ही हाथी थे।

गाँव वाले ४००० हज़ार थे। बादशाह को उनसे लड़ने में तकलीफ़ तो बहुत हुई और तीन पहर तक भूके प्यासे रह कर लड़ना पड़ा। निदान वह जीत गये और यों उस ब्राह्मण का इन्साफ़ करके पिछले दिन से डेरों में आये। यह इन्साफ़ १००० आदमियों के मारे जाने पर हुआ था।

अब जो इस देश के लोग अँगरेज़ी इन्साफ़ पर नुकता-चीनी किया करते हैं वे इस वृत्तांत को पढ़ कर अपने मन में सोचें कि पिछली अमलदारियों में ज़ुल्म कैसा सहज और इन्साफ़ कैसा कठिन था और अकबर बादशाह ने कैसे कैसे कष्टों और कड़े कड़े दंडों से ज़ुल्म घटाया और इन्साफ़ बढ़ाया था।

(४)

ख़्वाजामोअज़्ज़म अकबर बादशाह का मामा था और इस नाते के घमंड से हुमायूं बादशाह के राज्य में कई बार बड़े बड़े क़ुसूर कर चुका था और बच गया था। उस को हुमायूं बादशाह की उर्दू बेगी फ़ातमा की बेटी ज़ुहरा आगा ब्याही थी, पर वह उससे भी बुरा बर्ताव करता था। फ़ातमा अकबर बादशाह के महल में रहती थी। एक दिन उस ने अर्ज़ की कि ख़्वाजा यहाँ तो बादशाह से डरता है, मगर अब अपनी जागीर में जाता है और मेरी लड़की को भी लिये जाता है। शायद वहाँ उसको मार डाले। उसने यह बात ऐसी दीनता से कही थी कि बादशाह को करुणा आगई और फ़रमाया कि हम शिकार को जाते हैं, तेरी ख़ातिर से उसके मकान की तरफ़ हो कर निकलेंगे, वह सलाम करने को आवेगा तो उसे समझा कर तेरी लड़की को न ले जाने को कह देंगे।

कुछ समय पीछे बादशाह नाव में बैठ कर जमना से उतरे और .ख्वाजा के मकान की तरफ़ चल कर एक आदमी उसके लाने को भेजा। .ख्वाजा ने कहा कि मैं तो नहीं चलता और .गुस्से से महल में जा कर ज़ुहरा आगा को मार डाला जो हम्माम से निकल कर नई पोशाक़ पहन रही थी और खिड़की से सिर निकाल कर .खून की भरी तलवार बाहर फेंक दी और चिल्ला कर कहा कि मैंने तो उसका .खून बहा दिया है, जा कर कह दो। वह आदमी तलवार ले आया। बादशाह .गुस्से में भर कर उस के घर गये। वह तलवार की मूठ पर हाथ रक्खे बैठा था, बादशाह ने ललकार कर कहा कि जो कुछ भी हाथ हिलाया तो जान लेना कि मैं तेरी जान ले लूँगा।

यह सुनते ही वह घबराया और बादशाह ने उसको पकड़वा कर पूछा कि तू ने उस अबला को क्यों मारा और किस गुनाह में मारा? वह ऊल जलूल बकने लगा। तब पिटवा कर मुशकें बन्धवा लीं और जमना में डलवा कर कई गोते दिलवाये, लेकिन डूबा नहीं। निदान गवालियर के क़िले में भिजवा दिया जहाँ क़ैद में पड़ा पड़ा मर गया।

ख्वाजाजहाँ काबुली

.ख्वाजाजहाँ काबुली जहाँगीर बादशाह के राज्य में आगरे का हाकिम था और मुक़द्दमों के समझने और .फ़ैसला करने का उसका अच्छा ढब था। एक दिन एक आदमी ने यह दावा किया कि मेरा भाई नपुंसक था, परन्तु उसकी औरत ने एक लड़का उसका बना कर धन-माल दबा लिया है। .ख्वाजा ने औरत से पूछा तो उसने कहा कि नपुंसक तो नहीं पर कमज़ोर हो गया था। मैंने एक हकीम के कहने से ४० दिन तक उसको रोहू मछली का भेजा खिलाया जिससे वह ठीक हो गया था। .ख्वाजा ने एक अर्दली से कहा कि इस लड़के को अपने साथ दौड़ा। जब लड़का दौड़ते दौड़ते पसीने में भर गया तो उसका पसीना एक रूमाल से पोंछ कर सूंघा। उसमें मछली की बास आती थी। सब दरबारियों ने भी सूंघ कर तसदीक़ की। आख़िर में दावेदार झूठा पड़ गया। औरत अपने लड़के को लेकर घर गई।

जहाँगीर बादशाह ।

एक दिन नूरजहाँ बेगम छत पर खड़ी थी। बादशाही महलों की तरफ़ किसी को आने का हुक्म नहीं था। परन्तु एक कमबख़्ती का मारा मज़दूर उधर आ निकला। बेगम ने ग़ैरत और ग़ुस्से के मारे उस पर तमंचा झाड़ दिया, जिसकी गोली से वह ग़रीब मर गया।

जहाँगीर को ख़बर लगी तो बेगम से पुछवाया कि इसको क्यों मारा ? बेगम ने राजमद और यौवन मद से जवाब दिया कि हाँ मैंने मारा है क्योंकि इसने मेरे महल के नीचे आ कर मुझे घूरा था।

बादशाह ने कहा कि एक अनजान अजनबी के घूरने का तो यह दंड नहीं हो सकता कि वह अबूज गरदन मार दिया जावे और मुफ़ती से पूछा कि शरीअत (धर्मशास्त्र) का क्या हुक्म है। मुफ़ती ने बेधड़क कह दिया कि शरीअत में तो मारने वाले को मार डालने का हुक्म है।

बादशाह ने तुर्कनियों को हुक्म दिया कि जाकर बेगम को बाँध लाओ और जल्लाद से कहो कि उसका सिर उड़ा दे। यह हुक्म सुनते ही सारा दरबार काँप उठा, क्योंकि बादशाह ने उस समय नरसिंह का रूप धारण कर लिया था।

तुर्कनियों ने जब नूरजहाँ को जंज़ीर में जकड़ना चाहा तो वह सारे नाज़-नख़रे (मान-गुमान) भूल गई और किसी को अपना सहायक न देख कर दिल में कहने लगी कि आज मैंने जाना कि राज-हठ भी कोई चीज़ है। अब इसके आगे त्रिया-हठ तो नहीं चल सकती। कोई पोलीटिकल चाल चलना चाहिए। यह सोच कर उसने तुर्कनियों से कहा कि जाओ जहाँपनाह से मेरी यह तो अर्ज़ करो कि शरीअत में ख़ूबहा भी तो है। बादशाह ने मुफ़्ती से पूछा तो उसने कहा कि हाँ जहाँपनाह ! जो वारिस राज़ी हो जावें तो शरीअत में ख़ूबहा भी है। बेगम ने मज़दूर के वारिसों को एक लाख रुपया दे कर राज़ी कर लिया। उन्होंने दरबार में हाज़िर हो कर कह दिया कि हमने ख़ूबहा भर पाया। अब हमको ख़ून का दावा नहीं है; क़त्ल का हुक्म रुक जाना चाहिए।

बादशाह को जब पूरा पूरा यक़ीन हो गया कि इसमें कुछ छल-कपट नहीं है तो दरबार से उठ कर महल में गये। बेगम रूठी हुई एक

कोने में बैठी थी। बादशाह ने उसके पाँवों में अपना सिर रख दिया और कहा कि जो तू मारी जाती तो मैं भी मर जाता, परन्तु जो मैं इनसाफ़ न करता तो मर कर .खुदा को क्या मुँह दिखाता।

औरंगज़ेब

मारवाड़ में जागीरदारों का एक बड़ा ठिकाना बलूँदा है। वहाँ का कुँवर एक दिन शिकार को गया, परन्तु शिकार न मिलने से उदास हो कर लौटा। उसके साथियों ने एक जाट के रेवड़ में से एक मोटा ताज़ा बकरा पकड़ा और उसका कबाब करके आप भी खाया और कुंवर को भी खिलाया और .खूब दारू पी। जाट ने जोधपुर में जाकर पुकार की, परन्तु कुछ सुनाई न हुई। तब वह सीधा दिल्ली को गया और दो चार दिन इधर उधर फिर कर लोगों से सलाह पूछी। उन्होंने कहा कि यों तो बादशाह के पास पहुँचना बहुत मुशकिल है, जुमे के दिन बादशाह नमाज़ पढ़ने को मसजिद में आते हैं उस मौक़े पर लोग अपनी अर्ज़ विनती कर सकते हैं। जुमे के दिन जाट मसजिद के रास्ते में जा कर खड़ा हो गया और बादशाह की सवारी धूम धाम से आती हुई देख कर दिल में कहने लगा कि इस न.क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ कौन सुनेगा।

इतने में सिपाहियों ने आ कर जाट को रास्ते से हटा दिया और बादशाह की सवारी बढ़ती हुई मसजिद को चली गई, परन्तु लौटते हुए धीमे धीमे आई। बादशाही ख़ासे के आगे पीछे और दाहिने बायें दस दस गज़ ज़मीन भीड़ से ख़ाली छोड़ी हुई थी और फ़रयादी लोग एक एक जा कर अपनी अर्ज़ियाँ ख़ासे में डाल कर चले जाते थे। जाट ने भी दूसरे जुमे को अपनी अर्ज़ी डाली। बादशाह ने डालते हुए एक नज़र देख लिया। रात को अरज़ी पढ़ी तो उसमें लिखा था कि मैंने एक बकरे को, जिसकी माँ मर गई थी, दूध पिला पिला कर बेटे के बराबर पाला था, उसको बलूँदे के ठाकुर का बेटा मार कर खा गया और इस .ज़ुलम की कहीं सुनाई नहीं हुई, इस लिए ख़ावंदों के क़दमों में आया हूँ।

बादशाह ने अरज़ी पढ़ कर तड़के ही वज़ीर को हुक्म दिया कि मारवाड़ का एक जाट काली कमली ओढ़े हुए आया है, उससे सब हाल पूछ कर जोधपुर के वकीलों को लिखदो कि वहाँ ऐसे ऐसे .ज़ुलम होते हैं।

इसको तो राज़ी करके अभी राज़ीनामा इसी के हाथ भेजो और आयन्दा के लिए मुचलका दाख़िल करो नहीं तो जोधपुर ज़ब्त हो जा ेगा ।

जब वह जाट बादशाही हुक्म ले कर जसवंतपुर में वकीलों के पास गया तो उन्होंने उसको बहुत फटकारा और कहा कि तू पहले ही बादशाह के पास क्यों चला गया, हमसे तो कहा होता । जाट ने कहा कि मैं जोधपुर गया था, महाराज तो वहाँ थे नहीं और मुतसद्दियों ने मेरी सुनी नहीं । उन्हीं के भाई तुम भी हो, पहले तुम्हारे पास आता तो क्या निहाल करते, उलटा पकड़ कर मारवाड़ में भेज देते ।

वकीलों ने कहा कि जो हम नहीं सुनते तो महाराज के पास जाना था । वहीं बलूँदे के ठाकुर भी हैं । वे अपने बेटे को ओलँभा लिख देते ।

जाट ने कहा कि महाराज तो काबुल में हैं और ठाकुर बेटे को ओलँभा लिख देते इससे मेरा न्याय तो नहीं हो जाता ।

वकीलों ने पूछा कि फिर तू चाहता क्या है ? जाट ने कहा कि मैं तो बलूँदे के कुँवर से बेटे का वैर चाहता हूँ । मैंने बेटे के बराबर जिस बकरे को पाला था उसको वह मार कर खा गया है ।

वकीलों ने जाट को ज़िद पर चढ़ा हुआ देख कर राज़ीनामे की ज़रूरत से उसे बलूँदे का एक खेत लेने पर राज़ी करके महारानी हाडी जी के नाम अरज़ी सारे हाल की लिख दी जो महाराजा जसवंतसिंह जी के एवज़ी का काम जोधपुर में करती थीं और उसका राज़ी-नामा लिखा कर उसी के हाथ बादशाह के हज़ूर में भेजा । जाट ने दीवान को दिया और वह सब हाल कह कर अरज़ी भी दिखाई । बादशाह ने राज़ीनामा रख लिया और अरज़ी लौटा कर कहा कि उस से कहदो कि जो अब भी कुछ न हो तो फिर चला आना ।

जाट ने जोधपुर में ज़नानी डयोढ़ी पर आ कर अरज़ी अन्दर भेजी । महारानी साहिब ने पढ़ कर उसको तो बलूँदे के खेत का पट्टा लिख दिया और दीवान पर जुरमाना किया कि तू ने इस जाट की पुकार क्यों नहीं सुनी ? जो तू सुन लेता और हमसे अर्ज़ कर देता तो यह कभी बादशाह के पास जाकर अपने राज्य की पोल न खोलता ।

आसिफ़ुद्दौला।

लखनऊ में मुफ़तीगंज और शीशमहल महल्लों के बीच में एक नाला बहता था, जिससे आने जाने वालों को बहुत तकलीफ़ रहती थी। यहाँ तक कि बरसात में तो रास्ता ही बन्द हो जाता था। मुफ़तीगंज में नवाब क़ासिमअलीख़ाँ नाम के एक अमीर रहते थे, उन्होंने नाले पर पुल बना देना चाहा। जब काम चला तो एक बुढ़िया का छप्पर भी उसमें आ गया। नवाब ने बुढ़िया से कहलाया कि यहाँ पुल बनेगा; तुम अपने छप्पर का मोल चाहो सो लेलो। बुढ़िया ने कहा कि मेरा कोई वाली वारिस नहीं है। यह ज़मीन मेरी पीढ़ियों की है, मैं कभी अपने बाप-दादों की हड्डियाँ नहीं बेचूँगी। लोगों ने बहुत समझाया परन्तु उसने किसी की कुछ न मानी। फिर नवाब ने उसकी ज़मीन खुदा कर पुल की नीव में मिलाली और छप्पर फिकवा दिया। बुढ़िया रो कर बैठ रही और पुल बन गया। नवाब ने आसिफ़ुद्दौला से अर्ज़ कराई कि शीशमहल और मुफ़तीगंज के बीच में पुल की बहुत ज़रूरत थी। वह अब दूर हो गई है। हज़ूर भी मुलाहिज़ा फ़रमा लें।

आसिफ़ुद्दौला देखने को आये। ज्यों ही उनकी सवारी पुल के पास पहुँची त्योंही बुढ़िया को भी ख़बर लग गई। वह पुल के बीचों बीच आकर बैठ गई और चिकनी छालियाँ कतरने लगी। उसका यही धन्धा था। छालियाँ कतर कतर कर वह बेचा करती थी। अरदली के सवार उसको रास्ते से हटाने लगे। वह न हटी तो कतरा कतरा कर निकल गये। जब आसिफ़ुद्दौला की सवारी आई तो बुढ़िया चिल्ला कर बोली कि नवाब भाई! कुछ ख़ुदा का भी डर है। क़ासिमअलीख़ाँ ने पुल बनवा लिया और मेरा घर खुदवा कर छप्पर फिकवा दिया।

आसिफ़ुद्दौला ने दाँतों में अँगुली दबा कर कहा—हाय इतना ज़ुलम! और हुकम दिया कि पुल खुदवा कर फिकवा दो और इस बुढ़िया का छप्पर उसी तरह से डलवा दो जैसा पहले था। इतना कह कर उन्होंने सवारी लौटाली और नवाब क़ासिमख़ाँ से मिलना छोड़ दिया।

नवाब क़ासिमख़ाँ ने लाचारी से बहुत सा रुपया देकर बुढ़िया को राज़ी किया और उसके वास्ते एक अच्छा घर दूसरी जगह बनवा दिया। फिर उससे पूछ कर दुबारा पुल बनाया और उसी को भेज कर देखने की

सिफ़ारिश कराई । आसिफ़ुद्दौला उसकी सिफ़ारिश से राज़ी हुए और नवाब का .कुसूर माफ़ करके पुल देखने को आये ।

आगे के राजा, बादशाह और अमीर इस तरह अपनी प्रजा का लाड़ रखते थे तभी तो लोग आज तक उनके लिए रोते हैं और उन्हें याद करते हैं। इन्साफ़ अब भी मिलता है, परन्तु बहुत महँगा मिलता है। सो भी देर से।

वाजिदअली शाह ।

लखनऊ के बादशाह वाजिदअली शाह को एक किसान ने अर्ज़ी दी कि फलाँ सिपाही मेरी बकरी को मार कर खा गया है। बादशाह ने उस पर फ़ारसी का एक शेर लिख कर उसे अदालत में भेज दिया। उस शेर का यह अर्थ थाः—

बकरी ने जो घास और काँटे खाये थे उसकी तो उसको यह सज़ा मिली और जिसने उसका चिकना मांस खाया है वह क्या सज़ा पावेगा। अदालतवालों ने तहक़ीक़ात करके किसान को तो मुँह-माँगा मोल बकरी का मुजरिम से दिला दिया और मुजरिम को कुछ समय तक इस जुर्म की सज़ा में .कैद रक्खा ।

अमीर अबदुलरहमानख़ाँ ।

काबुल के अमीर अबदुलरहमानख़ाँ के पास एक आदमी ने यह नालिश की कि मैंने एक आदमी को ६०) रुपये कर्ज़ दिये थे। वह अब नहीं देता। अमीर ने उस आदमी को बुला कर पूछा। वह इन्कारी हो गया। उन्होंने मुद्दई से गवाही माँगी। मुद्दई ने कहा कि मैंने एक पेड़ के नीचे रुपये दिये थे। उसके सिवा और कोई गवाह नहीं है। अमीर ने कहा कि उसी पेड़ के नीचे जा; वह तुझको रुपये दिला देगा। 'मुद्दई' जो हुक्म; कह कर चुप-चाप चला गया और मुद्दायला हाज़िर रहा।

कुछ देर पीछे अमीर ने यों ही पूछा कि क्या वह आदमी उस पेड़ के पास पहुँच गया होगा। मुद्दायला बोल उठा कि अभी नहीं पहुँचा होगा। वह पेड़ बहुत दूर है। अमीर ने यह सुन कर अपने एक नौकर से तुर्की बोली में कहा कि मुद्दई को लौटा ला। और मुद्दायले को हुक्म दिया कि जाकर देख कि मुद्दई उस पेड़ के पास पहुँचा है या नहीं।

मुद्दायले के जाने के बाद जब मुद्दई आया तब अमीर ने उस को भी फ़रमाया कि मुद्दायला उस पेड़ के नीचे गया है या नहीं। जहाँ तू ने रुपये दिये थे। तू भी जाकर देख।

मुद्दायला वास्तव में उसी पेड़ के नीचे गया था। अमीर ने उसको हुक्म दिया कि बस ६०) रुपये मुद्दई को दे दो। जो तूने कर्ज़ न लिया होता तो तू उस पेड़ के नीचे नहीं जाता। झूठ बोलने के .कुसूर में भी उस पर कुछ जुरमाना किया।

इब्न-बतोता के सफ़रनामे से इन्साफ़।

इब्न-बतोता अफ़रीक़ा खंड के तिंजा-प्रांत का एक अरब विद्वान् था। उसने विक्रम संवत् के चौदहवें सैकड़े में ३० बरस तक सब पृथ्वी का पर्यटन करके एक बड़ा सफ़रनामा बनाया है। उसमें कई अद्भुत इन्साफ़ अपने देखे और सुने हुए लिखे हैं। उनको भी हम यहाँ लिख देते हैं।

पहले भाग से

अबी इब्नकाब।

मोहम्मद पैग़म्बर ने मदीने में एक मसजिद बनाई थी, उसके पास ही उनके चचा अब्बास का घर था, उस घर की मोरी मसजिद में गिरती थी। उमर ख़लीफ़ा ने नमाज़ियों को तकलीफ़ होते देख कर वह मोरी उखाड़ डाली। इस पर दोनों में झगड़ा हो कर अबी इब्नकाब पंच ठहरा। दोनों उसके घर गये और उस मुक़द्दमे में कुछ कहने लगे। काब ने कहा, चुप रहो। अब्बास को अपना दावा और दलील कहने दो। क्योंकि वह मुद्दई है। तब अब्बास ने कहा कि यह घर पैग़म्बर ने मुझ को दिया है। उनके जीते जी भी यह मोरी इसी तरह थी और उन्होंने कभी नहीं रोकी। पर अब उमर ने उखाड़ कर फेंक दी और मेरा घर भी मसजिद में मिला लेना चाहा है।

काब ने कहा कि मैं इस मामले में जो कुछ जानता हूँ, कहता हूँ। मैंने पैग़म्बर से सुना है कि दाऊद पैग़म्बर जब बेतुलमुकदस (मसजिद) को बनाने लगे थे तब वहाँ दो यतीम (अनाथ) लड़कों का घर था। दाऊद ने उनसे बेच देने को कहा। वे पहले तो इन्कारी हुए परंतु फिर बहुत कहने

राज़ी हुए और ठहराये हुए मोल पर घर बेच दिया। लेकिन जब बड़े हुए तब उसका बहुत बड़ा मोल माँगा। दाऊद नहीं दे सकते थे। .खुदा का हुक्म आया कि जो तू अपने माल से मोल देता है तब तो तू जान और जो मेरी दी हुई जीविका से देता है तो इनको राज़ी कर, क्योंकि मैं अपने उस घर से राज़ी नहीं हूँ जो तू .ज़ुल्म और दबाव से ज़मीन लेकर बनाता है। यह सुन कर दाऊद ने वह काम छोड़ दिया। उमर खलीफ़ा ने पूछा कि जब पैग़म्बर ने यह बात कही थी तब और भी कोई हाज़िर था। काब जाकर कई गवाह ले आया। तब उमरखलीफ़ा ने अब्बास को .खुदा की क़सम देकर कहा कि तू मेरे कंधे पर चढ़ कर मोरी बनाले। अब्बास ने ऐसा ही किया और कहा कि जब मेरा दावा सही हो गया तब मैंने अपना घर .खुदा की राह पर दिया। उमर ने उस को मसजिद में मिला लिया।

क़ाज़ी बुरहानुद्दीन।

शहर मारदीन का क़ाज़ी बुरहानुद्दीन अपने मकान के पास मसजिद के आँगन में अकेला बैठा रहता था और लोगों के न्याय चुकाया करता था। एक दिन एक औरत आई और पूछने लगी कि क़ाज़ी कहाँ है। क़ाज़ी ने कहा कि तुझे क़ाज़ी से क्या काम है। वह बोली कि मेरे मियां ने मुझे मारा है। उसके दूसरी भी औरत है। वह हम दोनों के साथ न्याय का बरताव नहीं करता है। मैंने उससे क़ाज़ी के पास चलने को कहा मगर वह नहीं आया। मैं ग़रीबिन हूँ; मेरे पास कुछ नहीं है जो क़ाज़ी के आदमियों को दूँ[1] जिससे वे उसको पकड़ कर अदालत में ले आवें।

क़ाज़ी ने पूछा कि वह कहाँ रहता है?

औरत—शहर के बाहर मल्लाहों के महल्ले में।

क़ाज़ी—मैं तेरे साथ उसके पास चलता हूँ।

औरत—.खुदा की क़सम, मेरे पास कुछ नहीं है, जो तुझ को चलने के बदले में दूँ।

---

(१) इस बात से जाना जाता है कि तलवाना उस समय में भी लगता था परंतु कोर्ट फ़ीस कुछ नहीं थी। क़ाज़ी भी न्याय का मोल कुछ नहीं लेते थे। वे मुद्दई-मुदायले को समझा कर राज़ी कर देते थे और बहुत देर भी नहीं लगाते थे।

क़ाज़ी—मैं तुझ से कुछ नहीं लूँगा, तू चल श्रौर गाँव के बाहर ठहर। मैं अभी आता हूँ।

वह गई श्रौर गाँव के पास ठहर कर रास्ता देखने लगी। क़ाज़ी अकेला वहाँ गया। ऐसे मामलों में वह किसी को अपने साथ ले भी नहीं जाता था। क़ाज़ी औरत के साथ उसके घर गया। औरत के पति ने क़ाज़ी को नहीं पहचाना। और ग़ुस्से होकर बोला कि तू यह किस मनहूस को ले आई है? क़ाज़ी ने कहा कि ख़ुदा की क़सम मैं वैसा ही हूँ जैसा कि तूने कहा। परन्तु अब तू उठ श्रौर अपनी बीबी को राज़ी कर। इसमें जब बहुत कहा-सुनी हुई तो श्रौरलोग भी आ गये। उन्होंने क़ाज़ी को पहचान कर सलाम किया। तब तो वह आदमी डर गया श्रौर घबराने लगा। क़ाज़ी ने उसको तसल्ली देकर कहा कि डरे मत, अपनी बीबी को राज़ी करले। उसको लाचार वैसा ही करना पड़ा। क़ाज़ी दोनों को राज़ी बाज़ी करके चला आया। इब्नबतोता लिखता है कि मैंने क़ाज़ी बुरहानुद्दीन को शहर मारदीन में देखा है। उसने मेरी दावत की थी।

मलिक नासिर।

मिस्र का सुलतान मलिक नासिर फ़रियादियों का न्याय चुकाने के लिए अठवाड़े में दो दिन न्याय की कचहरी में बैठता था श्रौर क़ाज़ी लोग उसके दायें बायें बैठ कर मुद्दइयों की अरज़ियाँ लेते थे श्रौर उसके सामने मुद्दायलों से पूछ-ताछ करते थे।

कबकख़ाँ।

एक दिन एक श्रौरत "मावरूलनहर" (मध्य एशिया) के बादशाह कबकख़ाँ के पास आकर पुकारी कि मैं ग़रीबिन हूँ श्रौर बाल-बच्चे वाली हूँ। एक गाय के दूध से गुज़ारा करती हूँ परन्तु आज का दूध एक अमीर छीन कर पी गया है।

कबकख़ाँ ने उसको बुलाया श्रौर हुक्म दिया कि इसका पेट चीरो। जो दूध निकल आया तो इसने अपनी सज़ा पाई नहीं तो इसके 'क़सास' (ख़ून के बदले) में इस श्रौरत का पेट चीरना। श्रौरत यह सुन कर

बोली कि मैंने अपना इन्साफ़ भर पाया और दूध इसको बख़्शा। पेट मत चीरो। कबकख़ाँ ने नहीं माना और पेट चिरवाया तो उसके कोठे में दूध था।

दूसरे भाग से

सुलतान शमसुद्दीन ऐलतमश।

इब्नबतोता सुलतान शमसुद्दीन ऐलतमश के हाल में लिखता है कि यह बादशाह परम प्रजा-पालक और न्याई था। उसने न्याय-नीति से हुक्म दे रक्खा था कि फ़रयादी लोग रंगीन कपड़े पहना करें, क्योंकि हिन्दुस्तान के रहनेवाले सभी सफ़ेद कपड़े पहनते हैं। वह जब सवारी या दरबार में किसी को रंगीन कपड़े पहने देखता तो तुरन्त बुला कर उसका मुक़द्दमा सुनता और उसका न्याय कर देता। कुछ समय पीछे उसने कहा कि कई आदमियों पर रात में ज़ुलम होता है और वे मेरे पास नहीं पहुँच सकते हैं और इन्साफ़ तुर्त फ़ुर्त होना चाहिए। इसके वास्ते उसने पत्थर के दो नाहर बनवा कर अपने महल की बुरजों पर आमने सामने रखवा दिये और उनके गले में लोहे की एक साँकल बँधवा दी जिसमें घंटियाँ लटकती थीं और हुक्म दिया कि जिस किसी पर रात में कहीं कुछ ज़ुलम हुआ हो तो आकर इन घंटियों को बजा दे। मैं उसी वक़्त उसका इन्साफ़ कर दूँगा।

(२)

जब शमसुद्दीन के पीछे रुकनुद्दीन बादशाह हुआ और उसने अपने सौतेले भाई मोअज्जुद्दीन को मार डाला और उसकी बहन रज़िया ने उससे बदल कर लोगों को अपने भाई का बदला लेने के लिए उभारा तब रुकनुद्दीन उसके मारने को भी तैयार हुआ। परन्तु रज़िया फ़ुरती करके जुमे के दिन, जब कि रुकनुद्दीन नमाज़ पढ़ने को जामे मसजिद में गया था, फ़रयादियों के से लाल कपड़े पहन कर अपने महल की छत पर चढ़ गई जो मसजिद से मिली हुई थी और लोगों को अपने बाप के न्याय और अहसान याद दिला कर कहने लगी कि रुकनुद्दीन ने मेरे भाई को बिना क़सूर मार डाला है और मुझको भी मारना चाहता है सो तुम लोग मेरे भाई का बदला लो और मुझको भी उसके ज़ुलम से बचाओ। इस विषय में उसने करुणा के इतने बहुत वचन अपने मुँह से निकाले कि लोगों के दिल

जलने लगे और उन्होंने हुल्लड़ मचा कर मसजिद को घेर लिया और रुकनुद्दीन को पकड़ कर रज़िया के हवाले कर दिया। रज़िया ने उसको अपने भाई के बदले मरवा डाला। उस समय तीसरा भाई नासिरुद्दीन बालक था इस लिए सब लोगों ने मिल कर रज़िया को ही तख़्त पर बैठा दिया और रज़ियासुलतान नाम रख कर उसका हुक्म मानने लगे।

सुलतान मोहम्मद तुग़लक़।

इब्नबतोता सुलतान मोहम्मद तुग़लक़ के राज्य में यहाँ आया था और बहुत बरसों तक उसकी सेवा में रह कर इनाम इकराम पाता रहा था। उसने अपने सफ़रनामे में सुलतान मोहम्मद की आदत और चाल-चलन, न्याय और अन्याय की बहुत सी बातें लिखी हैं। उनमें से जो न्याय-सबन्धी हैं वे यहाँ लिखी जाती हैं।

(१)

नामी हिन्दुओं में से एक ने क़ाज़ी से पुकार की कि सुलतान ने मेरे भाई को मार डाला है। क़ाज़ी ने सुलतान की हाज़िरी का हुक्म दिया। सुलतान पैदल बिना हथियार क़ाज़ी की कचहरी को दौड़ा आया और जब इजलास में पहुँचा तब साधारण लोगों के समान सलाम करके खड़ा हो गया। क़ाज़ी ने कह दिया था कि जब सुलतान आवे तब कोई उसकी ताज़ीम के वास्ते न उठे। सुलतान क़ाज़ी की तरफ़ मुँह करके हिन्दू मुद्दई के बराबर खड़ा हो गया। क़ाज़ी ने दोनों की बातें सुन कर सुलतान को मुद्दई के राज़ी करने का हुक्म दिया। सुलतान ने क़ाज़ी के हुक्म से जैसे हो सका मुद्दई को राज़ी कर लिया।

(२)

एक मुसलमान ने सुलतान पर माल का दावा किया। क़ाज़ी ने तहक़ीक़ात के बाद उस माल को सुलतान पर साबित पाकर अदा करने का हुक्म दिया और सुलतान ने अदा करके मुद्दई को राज़ी कर दिया।

(३)

शाहज़ादों में से एक ने क़ाज़ी की कचहरी में यह दावा किया कि सुलतान ने मुझे बिना क़ुसूर ही पीटा है। क़ाज़ी ने तहक़ीक़ात करके हुक्म

दिया कि सुलतान इस लड़के को राज़ी करे। माल से राज़ी न हो तो जो बदला यह चाहे वही दे।

उसी दिन मैंने देखा है कि सुलतान ने कचहरी से लौट कर उस लड़के को बुलाया और उसके हाथ में लकड़ी देकर कहा कि तुझे मेरे सिर की क़सम है कि मैंने जैसे तुझे मारा है वैसे ही तू भी मुझे मार। उस लड़के ने लकड़ी ले कर २१ बार मारी और यहाँ तक मैंने देखा कि सुलतान की टोपी सिर से गिर पड़ी थी।

(४)

बयाने में एक बार सुलतान मुहम्मद तुग़लक़ गया। लोगों ने वहाँ के हाकिम मलिक मजीर की बहुत पुकार की जो बड़ाही ज़ालिम, दुष्ट और निर्दई था। बादशाह ने ख़फ़ा होकर उसको दीवान की कचहरी में पकड़ मँगाया और शहरवालों को बुला कर अपने अपने दावे करने को कहा। और मलिक मजीर को दावेदारों का राज़ीनामा करने का हुक्म दिया। जब वह अपना सब माल फ़रियादियों को दे चुका तब ज़ुल्म करने की सज़ा में बादशाह के हुक्म से मारा गया।

दक्खिन के राजाओं के इन्साफ़।

जब 'इब्नबतोता' चीन में जाने के लिए सुलतान मुहम्मद की अमलदारी से निकल कर दक्षिण मलेबार में गया तो वहाँ के १२ हिन्दू राजाओं की अमलदारियों में होता हुआ जो बहुत ही आबादी और चैनचान की थीं, कोलम बंदर में पहुँचा जहाँ के राजा का नाम 'तेखरी' था। उसके हाल में वह लिखता है कि यह राजा हिन्दू है और मुसलमानों का बहुत मान-सम्मान करता है। चोरों और लुटेरों से जवाब पूछता है और उनको कड़े कड़े दंड देता है। मैं कई बातें जो इस राजा की न्याय-नीति की साक्षी हैं, अपनी आँखों की देखी हुई पाठकों के पढ़ने के लिए लिखता हूँ। उनमें से एक यह है।

(१)

जिन दिनों मैं कोलम में था तो एक इराकी (ईरानी) तीरंदाज़ अपनी जाति के एक आदमी को मार कर औजी नाम एक अमीर के घर में जा बैठा जो बहुत ही मालदार था। मुसलमान चाहते थे कि

मक़्तूल का जनाज़ा ले जाकर दफ़न करदें। मगर राजा के ओहदेदारों ने न ले जाने दिया और कहा कि जब तक हम क़ातिल को न पकड़ लें, मक़्तूल को नहीं गाड़ने देंगे। फिर उन्होंने मक़्तूल की लाश एक तावूत में रखा कर ओजी के दरवाज़े पर रख दी। वहां वह सड़ने लगी। ओजी यह कोशिश करता रहा कि बहुत सा माल दे कर क़ातिल की जान ख़रीद ले, परन्तु उन लोगों ने नहीं माना। अंत को वह यहां तक राज़ी था कि अपना सारा धन-माल दे दे और क़ातिल को बचाले। जब यह भी उन ओहदेदारों ने मंज़ूर न किया तब लाचार हो कर उसने क़ातिल को सौंप दिया। जब वह अपने किये को पहुँच गया तब मक़्तूल की लाश गाड़ी गई।

(२)

मैंने सुना है कि एक दिन राजा सवार होकर शहर के बाहर गया और रास्ते में एक बाग़ की गली से निकला। उसका जमाई भी उसके साथ था, जो राज-कुमारों में से था। बाग़ के बाहर एक आम पड़ा हुआ था, उसने उसे उठा लिया। राजा ने ग़ुस्सा होकर उसको बुलाया और बीच में से दो टुकड़े करवा डाले और रास्ते में दोनों तरफ़ दो सूली खड़ी करा कर एक एक टुकड़े को एक एक सूली पर लटका दिया; और आम को भी बीच में से चिरवा कर आधा बायें और आधा दाहिने अंग की तरफ़ रखवा दिया। लोगों को डर हो जाने के लिए सूलियां वैसी ही रहने दीं।

कालीकोट का वज़ीर।

ऐसी ही एक बात मैंने कालीकोट के वज़ीर की भी देखी है। वह इस तरह की है कि जब मैं बंदर कालीकोट में था, तब वहां के वज़ीर के भतीजे ने एक मुसलमान व्यापारी की तलवार छीन ली और क़ीमत नहीं दी। व्यापारी ने उसके चचा से पुकार की। वह इन्साफ़ करने का इक़रार करके घर से निकला और दरवाज़े पर बैठ गया। फिर भतीजे को बुलाया। वह उसी तलवार को लटकाये हुए आया। वज़ीर ने पूछा कि क्या तू ने यह तलवार मुसलमान व्यापारी की ली है। उसने कहा, हां! फिर पूछा कि मोल दे दिया है? वह उसके आगे झूठ नहीं कह सकता था,

इसलिए बोला कि नहीं दिया। वज़ीर ने .गुस्सा होकर अपने नौकरों को हुक्म दिया। उन्होंने उसको पकड़ा और उसी तलवार से उसका सिर उड़ा दिया। फिर वह तलवार उस व्यापारी को लौटा दी।

सुलतान अबू इनान।

इब्न-बतोता ने हिंदुस्तान, चीन, तुरकिस्तान और रूम के सफ़र से अपने वतन को लौट कर सुलतान अबू इनान मग़रबी के हाल में लिखा है कि यह बादशाह रोज़ अदालत में बैठता है और फ़रियादियों का न्याय करता है। जुमे का दिन तो न्याय ही के वास्ते नियत कर रक्खा है। जुमे की नमाज़ पढ़ कर तीसरे पहर तक फ़रियादी औरतों की अरज़ियाँ सुनता है। जिस औरत की अरज़ी पढ़ी जाती है चोबदार उसका नाम ले कर पुकारते हैं। वह सामने आकर खड़ी हो जाती है। जो चाहती है रूबरू अर्ज़ करती और अपने इन्साफ़ को पहुँचती है।

तीसरे पहर बाद मर्दों की अरज़ियाँ लेता है और हर एक का काम निकाल देता है। उस समय बड़े बड़े क़ाज़ी और मुफ़्ती हाज़िर रहते हैं। जो मुक़दमा शरीयत (१)के हुक्म से होने वाला होता है वह उनको सौंप-दिया जाता है। मैंने उसकी जितनी रुचि और ताकीद न्याय-नीति के क़ानून चलाने, .ज़ुल्म और अन्याय के मिटाने में देखी है, वैसी किसी की भी दुनिया भर के बादशाहों में नहीं देखी। हिंदुस्तान के बादशाह (मोहम्मद तुग़लक़) ने अपने एक अमीर को इस काम पर नियत किया था कि वह लोगों की अरज़ियाँ लेकर उनका .खुलासा ठीक समय पर सुना दिया करे। परन्तु फ़रियादियों को रूबरू बुलाने की शर्त नहीं थी जिससे वे लोग सामने आकर अपनी दिलजमई कर सकते।

(२)

सुलतान अबू इनान ने अपने राज्य में सब जगह यह हुक्म भेज दिया था कि कर्मचारी लोग .क़ैदियों के साथ नरमी और मेहरबानी करें और उनसे इतना दण्ड न माँगें जिसको वे न दे सकते हों। उसने हर शहर के क़ाज़ी को लिख भेजा था कि हाकिमों और तहसीलदारों की ख़बर रक्खे जिससे वे ग़रीबों और दीन-दुखी लोगों पर ज़ोर और .ज़ुल्म न कर सकें।

---

(१) मुसलमानी धर्मशास्त्र।

मनसी सुलेमान।

इब्न-बतोता सोडान के बादशाह मनसी सुलेमान के विषय में लिखता है कि एक दिन वह अपनी राजधानी के शहर वाली (१) की जुमा-मसजिद में नमाज़ पढ़ने गया था। उस समय शहर मसूफ़ा का एक व्यापारी खड़ा हुआ और कहने लगा कि मसजिद वालो! तुम गवाह रहना। मैं सुलेमान मनसी की फ़रियाद पैग़म्बर से करूँगा। इस बात के सुनते ही सुलतान के महल से कई आदमियों ने आ कर उससे पूछा कि क्या तुझ पर किसी ने ज़ुलम किया है या तेरी कोई चीज़ छीन ली है। व्यापारी ने कहा कि शहर अबुअलायन के मनसा अर्थात् नायब हाकिम ने ६०० मिसक़ाल (२) सोने की क़ीमत का माल मुझ से लेलिया और उसके बदले १०० मिसकाल सोना मुझको देता है।

सुलतान ने उसी वक़् सिपाहियों को भेजा। वे कई दिन पीछे नायब को ले आये। सुलतान ने मुद्दई मुद्दायले को क़ाज़ी की कचहरी में भेज कर तहक़ीक़ात का हुक्म दिया। मुद्दई का दावा साबित होगया। सुलतान ने नायब से व्यापारी का हिसाब दिला कर उसको नौकरी से दूर कर दिया।

(२)

सुलतान सुलेमान मनसी की बड़ी बेगम कासा, जो उसके साथ राज्य का काम किया करती थी और उसका नाम भी सुलतान के नाम के साथ खुतबे में पढ़ा जाता था, सुलतान के चचा की बेटी थी। परन्तु सुलतान ने ख़फ़ा होकर एक अमीर की निगाहबानी में उसे क़ैद कर दिया और दूसरी बेगम बनज़ू नाम को अपने पास बुला लिया। परन्तु वह उतने बड़े घराने की नहीं थी; इस वास्ते लोग इस मामले में बहुत बातें बनाते थे और सुलतान के इस काम को पसंद नहीं करते थे। सुलतान के कुटुम्ब की बेगमों ने भी, जो बधाई देने को बनज़ू के पास गईं, अपने मुँह और माथे पर धूल नहीं डाली जैसा कि दस्तूर था, हाथों पर ही डाल ली। कुछ दिनों बाद सुलतान ने कासा को छोड़ा तो वे ही बेगमें जब उसको बधाई देने गईं और उन्होंने उसके आगे अपने सिर पर धूल डाली तो बनजू ने सुलतान से शिकायत की। सुलतान बेगमों पर ख़फ़ा हुआ और वे डर कर जुमा मसजिद में जा छिपीं।

---

(१) वाली उस शहर का नाम है। (२) एक मिसकाल ४॥ मासे का होता है।

जब सुलतान ने क़सूर माफ़ करके उनको अपने सामने बुलाया तब वे नंगी होकर गईं । क्योंकि वहाँ का क़ायदा ऐसा ही था । सुलतान उनसे राज़ी हो गया। वहाँ यह भी रिवाज है कि सुलतान जिसका क़सूर माफ़ कर देता है वह सात दिन तक शाम सवेरे दरबार की ड्योढ़ी पर जाकर अपने सिर पर धूल डालता है । उन बेगमों ने भी ऐसा ही किया और कासा भी रोज़ अपने ग़ुलामों और लौंड़ियों समेत सवार होकर मुँह छिपाये माथे पर धूल डालती हुई ड्योढ़ी पर जाती थी पर सुलतान उसका मुँह नहीं देखता था। बड़े बड़े अमीर इस विषय में सुलतान से बहुत कहा-सुनी करते थे ।

निदान सुलतान ने उनकी बातें सुन कर एक दिन सब अमीरों को दरबार में बुलाया और दोगा तरजुमान (दुभाषिये) ने बादशाह की तरफ़ से उनको सुना कर कहा कि तुम कासा के विषय में बहुत कुछ बातें बनाते हो । अब सुनो कि कासा ने बहुत बड़ा गुनाह किया है। फिर कासा की एक लौंड़ी को, जो जंज़ीरों में जकड़ी हुई थी, बुलाकर कहा कि तू अपना हाल सच सच कह । उसने जो कुछ कहा उससे मालूम हुआ कि कासा ने उसको सुलतान के चचेरे भाई जातल के पास भेज कर, जो बाग़ी होकर शहर कनेर में भाग गया था, यह कहलाया कि जो तू इधर आवे तो मैं फ़ौज की मिलावट से सुलतान को गद्दी से उतार कर तेरा साथ दूँ । अमीरों ने जो यह सुना तो दाँतों में उँगलियाँ दबा कर कहा कि वास्तव में यह बड़ा पाप है । इसका प्रायश्चित्त प्राणदण्ड के सिवा और कुछ नहीं है ।

कासा यह सुनकर डरी और भाग कर ख़तीब की शरण में चली गई । शरण लेने की जगह तो मसजिद थी परन्तु जो कोई मसजिद में नहीं पहुँच सकता है वह ख़तीब के घर चला जाता है । इस बात से जाना जाता है कि सुलतान मनसी सुलेमान न्याय और लोकमत का कितना ध्यान रखता था ।

मनसी मूसा ।

इब्नबतोता ने आगे चल कर मनसी मूसा के हाल में लिखा है जो मनसी सुलेमान से पहले सोडान का सुलतान था; एक दिन वह नील नदी की खाड़ी में, जो शहर मीमा के पास थी, गया । क़ाज़ी अबुलअब्बास, जो गोरे रंग के लोगों में से था, उसके पास आया । उसने चार हज़ार

मिसकाल सोना उसको दिया । परन्तु जब सुलतान मीमे में पहुँचा तो अबुल-अब्बास यह कह कर कि मेरा वह सारा माल चोरी गया रोने-पीटने लगा । सुलतान ने मीमे के हाकिम को बुला कर धमकाया और कहा कि इसका माल और चोर को लाकर हाज़िर कर । परन्तु उस शहर में तो कोई चोर ही न था, इसलिए हाकिम के बहुत ढूँढ़ने पर भी कुछ पता न लगा । तब वह एक दिन क़ाज़ी के घर गया और उसके नौकर-चाकरों को डराने, धमकाने और फुसलाने लगा । निदान एक लौंडी ने कहा कि सच बात तो यह है कि क़ाज़ी का माल कोई चुरा नहीं ले गया । उसीने अपने हाथ से एक जगह गाड़ दिया है । फिर उसने वह जगह भी बता दी । वहाँ खोदने से वह माल निकल आया । हाकिम ने माल ले जाकर सुलतान के आगे रख दिया और सब हाल कह सुनाया । सुलतान क़ाज़ी पर ख़फ़ा हुआ और उसे पकड़ कर आदमियों को खाजाने वाले लोगों के शहरों में भेज दिया, परन्तु उन्होंने उसको नहीं खाया । क्योंकि उनका ऐसा विश्वास है कि सफ़ेद रंग का आदमी कच्चा होता है और हानि करता है, इसलिए खाने के लायक़ नहीं है । काले रंग का आदमी पक्का और खाने के लायक़ है ।

नौशेरवाँ बादशाह ।

किताब रमूज़ुलहिकत में लिखा है कि नौशेरवाँ बादशाह के राज्य में आजर बायजाँ के हाकिम ने एक ग़रीब औरत की ज़मीन ज़बरदस्ती अपनी हवेली में मिला ली और उसे अपना मन-चाहा मोल देना चाहा । वह बेचारी उसी के लेने पर राज़ी हो गई । परन्तु दो साल तक वह भी उसे नहीं मिला । तब वह नौशेरवाँ की राजधानी मदायन में पुकारने आई । यहाँ भी छः महीने तक फिरती रही, बादशाह तक न पहुँचने पाई । निदान एक दिन बादशाह शिकार को जाता हुआ मिला । उसने दौड़ कर घोड़े की लगाम पकड़ ली और अपना हाल कहा । नौशेरवाँ ने अपने भरोसे के एक ख़िदमत-गार को तहक़ीक़ात के वास्ते भेजा । उसने लौट कर अर्ज़ की कि जहाँ तक मैंने निर्णय किया औरत का कहना ठीक पाया । बादशाह ने हाकिम को बुला कर मरवा डाला और उसकी हवेली उस औरत को देदी । उस दिन से उसने कचहरी में बैठना शुरू किया और यह हुकम जारी कर दिया कि कचहरी के वक़्त जो फ़रयादी आवे वह उसी दम मेरे सामने लाया

जाय और बाक़ी वक़्त के वास्ते अपने महल की दीवार से एक बड़ी लोहे की साँकल लटका दी और उसमें एक घंटा बाँध कर ढिँढोरा पिटवा दिया कि रात में भी जो फ़रयादी आकर साँकल हिला देगा उसका इन्साफ़ उसी वक़्त कर दिया जायगा ।

(२)

उसी किताब में लिखा है कि एक दिन नौशेरवाँ कचहरी कर रहा था कि एक साँप आया । लोग उसको मारने लगे । बादशाह ने कहा, मत मारो; शायद फ़रयादी हो । साँप सिंहासन के पास आ कर ठहर गया । बादशाह ने उसकी सूरत से जान लिया कि इस पर कुछ ज़ुल्म हुआ है । उसने तुरंत हुक्म दिया कि कई सिपाही इसके साथ जायँ और ख़बर लायँ कि क्या हाल है । वे उसके साथ गये । साँप जंगल में जाकर एक सूखे कुँए पर ठहर गया । सिपाहियों ने बादशाह को ख़बर दी । हुक्म आया कि अंदर जाकर देखो । सिपाही कुएँ में उतरे तो क्या देखते हैं कि एक छोटा साँप मरा पड़ा है और एक काला बिच्छू उसके सिर पर बैठा है । सिपाहियों ने उसी वक़्त बिच्छू को मार डाला जिसने साँप के बच्चे को मारा था ।

दूसरे दिन साँप फिर दरबार में आया और अपने मुँह से कुछ बीज बादशाह के आगे डाल कर चला गया । बादशाह ने बोने का हुक्म दिया । उन बीजों से बावची उगी । उसका फूल कभी किसी ने ईरान में नहीं देखा था । नौशेरवाँ ने उसका नाम शाहसफ़रम रक्खा । जिसको अबरेहान कहते हैं ।

(३)

एक दिन एक आदमी जंगल को शिकार के वास्ते गया था । वहाँ एक लाश पड़ी थी । उसकी छाती पर एक छुरी भी रक्खी थी । वह कमबख़्ती का मारा उसको उठा कर देखने लगा । इतने ही में कोतवाल वहाँ आ पहुँचा और उसको क़ातिल समझ कर पकड़ ले गया । जब कुछ दिनों पीछे सूली पर चढ़ाने के लिए उसको बाज़ार में लाये तो एक आदमी भीड़ को चीरता हुआ आया और पुकार कर कहने लगा कि इसको मत मारो । उस आदमी को तो मैंने मारा है, उसका ख़ून मुझसे लेना चाहिए ।

कोतवाल ने यह सुन कर उसको तो छोड़ दिया और इसको नौशेरवाँ बादशाह के सामने ले जाकर खड़ा किया । नौशेरवाँ ने सब हाल सुन कर उसको भी छोड़ दिया और कहा कि जो इसने एक आदमी को मारा है

तो दूसरे को मौत से बचाया है। उसकी मैात अपने ऊपर ली है। ऐसे आदमी का मारना वाजिब नहीं। यह पहले तो हत्यारा था, परंतु अब परोपकारी है।

मिस्टर बरूस।

सीमा-प्रान्त के नगर चारसिद्ध की एक सेठानी ने अपना पुराना गहना श्रैार कुछ रुपया एक मुसलमान सुनार को नया गहना बना देने के लिए दिया था। उसे लेने के लिए वह रोज़ उसके घर जाया करती थी। एक दिन किसी ने सेठ से कहा कि जब तुम दुकान पर जाते हो तब सेठानी कहीं चली जाती है श्रैार शाम को घर आती है। सेठ दूसरे दिन दूकान पर जाकर तुर्तही घर को लौट आया श्रैार सेठानी को जाती हुई देख कर उसके पीछे हो लिया। जब वह सुनार के घर में चली गई तो यह बाहर बैठ गया। इतने ही में भीतर से कुछ गड़बड़ सुनाई दी। सेठ अन्दर गया तो क्या देखता है कि सेठानी गहना माँगती है श्रैार सुनार कहता है कि मुझे दिया ही कब था। सेठ उस मुसलमान की यह बेईमानी देख कर मिस्टर बरूस साहिब मैजिस्ट्रेट की कचहरी में गया। साहिब ने सुनार को बुलाया तो वहाँ भी वह इन्कारी हो गया। उसके हाथ में दो सोने की अँगूठियाँ थीं। साहिब ने कहा कि यह अँगूठियाँ बहुत सुन्दर हैं, मुझे भी ऐसी ही बनवानी हैं। फिर वे अँगूठियाँ उससे देखने के लिए लेकर कहा कि अच्छा तुम अभी बाहर ठहरो श्रैार पुलिस सारजेण्ट को बुला कर कहा कि तुम यह अँगूठियाँ सुनार की बीबी को दे कर कहो कि तुम्हारे ख़ाविन्द को क़ैद होती है। उसने यह निशानी भेजी है श्रैार सेठानी का गहना मँगवाया है। जो तुम देदोगी तो उसे क़ैद नहीं होगी। उस पति-प्राणा ने झट गहना निकाल कर दे दिया। जब गहना कचहरी में आ गया तो साहिब ने सुनार को बुला कर फिर पूछा। परन्तु वह कब सच बोलने वाला था। फिर साफ़ इन्कारी हो गया। तब सेठानी को बुला कर गहना दिखाया श्रैार पूछा कि यह तेरा ही गहना है? सेठानी गहने पर गिर पड़ी श्रैार गिड़गिड़ा कर कहने लगी, हाँ साहिब! मेरा ही है। साहिब ने उसको गहना दे दिया श्रैार सुनार को ६ महीने की क़ैद की सज़ा दी।

ज्वाइण्ट मैजिस्ट्रेट सहारनपुर ।

अप्रेल सन् १९१० के राजपूत गज़ट लाहौर में हमने साहिब ज्वाइण्ट मैजिस्ट्रेट सहारनपुर के इन्साफ़ की ख़बर पढ़ी थी, जिसका ख़ुलासा यह है कि सहारनपुर में नहरों के अफ़सर अँगरेज़ का सावरन (मुहरों) से भरा हुआ बटुआ गिर पड़ा। वे घोड़ा दौड़ाते हुए जा रहे थे । वह एक मुसाफ़िर ने उठा लिया। कुछ ही देर बाद साहिब बहादुर बटुआ न देख कर लौटे और आँखें फाड़ फाड़ कर नहर की पटड़ी पर देखने लगे। मुसाफ़िर ने, जो वहीं बैठा था, पूछा कि साहिब क्या देखते हैं ? साहिब ने फ़रमाया कि हमारा बटुआ जेब से निकल पड़ा है। मुसाफ़िर ने यह सुनते ही वह बटुआ ज्यों का त्यों उनको दे दिया। साहिब ने खोल कर देखा और सावरनों को गिन कर कहा कि तीन कम हैं। फिर उस ईमानदार मुसाफ़िर को बेईमान बना कर पुलिस द्वारा ज्वाइण्ट मैजिस्ट्रेट साहिब ज़िले सहारनपुर की अदालत में पहुँचाया। मुसाफ़िर ने सच्चा सच्चा हाल कह दिया। मैजिस्ट्रेट साहिब ने ख़ज़ाने से तीन सावरन मँगाये और मुद्दई से कहा कि लीजिए, ये तीन सावरन इस बटुवे में तो डालिए। साहिब ने बहुत ज़ोर मारा, मगर वे तो उसमें समा नहीं सके। तब मैजिस्ट्रेट ने उनसे बटुआ लेकर मुसाफ़िर को दे दिया और कहा कि साहब के बटुवे में ६३ सावरन थे और इस बटुवे में ६१ भी नहीं आ सकते जो ख़ुदा ने इस मुसाफ़िर को इनायत किया है और यही इसका हक़दार है। मुसाफ़िर लेता न था मगर मैजिस्ट्रेट साहिब ने चपरासी को हुक्म दिया कि यह बटुआ इसको दे कर रेल में बैठा दे। इस इन्साफ़ की धूम ज़िले भर में मच गई और सब लोग धन्य धन्य कहने लगे। मुद्दई अँगरेज़ था, मैजिस्ट्रेट भी अँगरेज़ थे और मुद्दालेह हिन्दुस्तानी था। परन्तु मैजिस्ट्रेट साहिब ने इन्साफ़ में अपनी जाति का कुछ पक्षपात नहीं किया। हिन्दुस्तान में ऐसे ही पक्षपात-रहित मैजिस्ट्रेटों की हर जगह ज़रूरत है।

चकोरों से इन्साफ़ ।

ईरान में एक बड़ा सौदागर था। उसके यहाँ सैकड़ों आदमी नौकर थे। परन्तु उसके बेटा न होने से उसने एक ग़ुलाम को बेटे के समान पाला था और उसको हमेशा घर में और सफ़र में साथ रखता था। इतने पर भी

वह नमकहराम .गुलाम उस भलेमानुस को मारने की घात में लगा रहता था। क्योंकि वह जानता था कि इसका वारिस तो कोई है नहीं; जो कुछ हूँ मैं ही हूँ। इसकी सरकार सब मुझसे राज़ी है। यदि किसी हिकमत से चुपचाप इसका काम तमाम कर डालूँगा तो कोई मुझे पूछने वाला नहीं है।

निदान ताक में रहते रहते एक दिन उसको अपने सोचे हुए पाप कर्म करने का अवसर एक सफ़र में मिल गया। वह सैादागर क़ाफ़िले से बिछुड़ कर शिकार के पीछे एक उजाड़ जङ्गल में जा पड़ा था जो पहाड़ों से घिरा हुआ था। यह .गुलाम साथ ही था। मैाक़ा पाकर वह आगे बढ़ा श्रोर अपने मालिक को घोड़े से गिरा कर छाती पर चढ़ बैठा श्रोर छुरी से गला काटने लगा। सैादागर ने मरते मरते चकोरों को वहां फिरते देख कर कहा कि चकोरो! तुम गवाह रहना श्रोर गवाही देना कि इस नमकहराम ने मुझको नाहक मारा है। .गुलाम यह सुन कर हँसा श्रोर बोला कि चकोर बेज़बान क्या गवाही देंगे श्रोर घोड़ा दैाड़ा कर क़ाफ़िले से आ मिला श्रोर कहने लगा कि आग़ा को तो चीते ने मार डाला श्रोर मैं बड़ी मुश्किलों से बच कर तुमको ख़बर देने आया हूँ। अब मैं ऐसे मालिक बिना जी कर क्या करूँगा। तुम सब माल असबाब को लेकर लैाट जाश्रो। मैं फ़क़ीर होकर मक्के को चला जाऊँगा श्रोर वहीं अपनी बाक़ी उमर बिताऊँगा।

क़ाफ़िले वालों ने उसकी बात का विश्वास कर लिया श्रोर कहा कि जो होना था सो हुआ; अब तुम्हीं इस क़ाफ़िले के मालिक हो श्रोर उनकी ज़िन्दगी में भी तुम्हीं मालिक थे। उनका तो नाम ही नाम था। अब जो तुम फ़क़ीर हो जाश्रोगे तो यह बना बनाया क़ाफ़िला उजड़ जायगा श्रोर फिर किसी के बनाने से कुछ न बनेगा।

यह बात .गुलाम के मनभाती तो कभी से थी, परन्तु लोगों के दिखलाने को कई दिन तक सिर हिलाता श्रोर सफ़र करता रहा। जब देखा कि मैाक़े वारदात से बहुत दूर निकल आया है तो उन लोगों के सिर पर बड़ा भारी छप्पर अहसान का रख कर अपने मालिक की गद्दी पर बैठ गया श्रोर सारा काम मालिकी से करने लगा श्रोर उस पाप कर्म को बिलकुल भूल गया।

कई बरस पीछे वह क़ाफ़िला दूसरे मुल्क की राजधानी में पहुँचा श्रोर .गुलाम दस्तूर के माफ़िक वहाँ के वज़ीर से मिलने श्रोर भेंट देने को गया। वज़ीर ने दूसरे दिन उसकी दावत की। उस दिन के खाने में चकोर का मांस

भी था, .ग़ुलाम उसको देख कर हँसा। वज़ीर ने हँसने का सबब पूछा तो कहा कि इस वक्त एक बेवकूफ़ आदमी की बात याद आने से हँसी आगई। वज़ीर ने पूछा कि वह क्या बात थी, मेहरबानी करके कहो तो मैं भी सुनूँ।

.ग़ुलाम ने कहा कि एक बड़ा सौदागर था। उसके यहाँ लाखों रुपये का व्यापार होता था। हज़ारों गुमाश्ते और नौकर चाकर थे। उसकी सरकार अमीरों की सी बनी हुई थी। वह जब व्यापार करने के वास्ते एक देश से दूसरे देश में जाता था तो उसके साथ बहुत बड़ा क़ाफ़िला चलता था। लोग उसके क़ाफ़िले को लश्कर कहते थे। बड़े बड़े बादशाह वज़ीर और अमीर उसके मिलने से .ख़ुश होते थे। वह जहाँ जाता था वहीं उसका बड़ा आगत-स्वागत होता था।

एक बार वह सफ़र में था। चलते चलते जंगल में हिरनों का झुंड दिखाई दिया। उसने उनके पीछे घोड़ा दौड़ाया। साथियों में से एक के सिवा और सब पीछे रह गये। वह एक .ग़ुलाम भी था। वे दोनों जब पहाड़ों में पहुँचे तो .ग़ुलाम के मन में नमकहरामी सूझी। वह अपने मालिक को घोड़े से गिरा कर मारने लगा। उसने इधर उधर देखा कि कोई आदमी मदद देने के लिए मिले परंतु वहाँ चकोरों के सिवा कोई नज़र नहीं आया; तब उसने चकोरों से कहा कि तुम गवाह रहना और गवाही देना कि यह .ग़ुलाम मुझे नाहक मारता है। .ग़ुलाम यह सुनकर हँसा था। आज यहाँ चकोरों का मांस देख कर मुझे वह बात याद आगई इस लिए मैं हँसा। इसके सिवा और कोई बात हँसी की नहीं थी।

वज़ीर यह क़िस्सा सुन कर चक्कर में पड़ गया और सोचने लगा कि इस का क्या तात्पर्य है। परंतु फिर एक बार सुनने के लिए .ग़ुलाम से कहा कि आपने बहुत रोचक क़िस्सा कहा। मैंने तो कभी आज तक ऐसा नहीं सुना था। आप कृपा करके एक बार और कहिए, क्योंकि बीच बीच में मेरा ध्यान इधर-उधर बट गया था। जो लोग दूर बैठे थे उनको भी पास आने का इशारा किया और कहा कि आओ तुम भी सुनो; कैसा अच्छा क़िस्सा है और इनके मुँह से क्या अच्छा मालूम होता है। तुमने भी कभी ऐसा अद्भुत क़िस्सा नहीं सुना होगा।

यह इशारा पाते ही वज़ीर के हाली-मुवाली सब उसके पास आ बैठे और .गुलाम से कहने लगे कि, साहिब, हम पर भी मेहरवानी कीजिए, दूर होने से हमने तो कुछ सुना भी नहीं है।

.गुलाम इतनी .खुशामदों से फूल गया और .खूब बना बना कर और नमक-मिरच लगा लगा कर फिर अपनी रामकहानी कह गया। सब लोगों ने बहुत तारीफ़ की और वज़ीर ने कहा कि सच बात तो यह है कि यह क़िस्सा ऐसा अछूता और अनोखा है कि जहाँपनाह से अर्ज़ किया जाय, परंतु रह रह कर यह सोच आता है कि जहाँपनाह कहीं इसको गप न समझें और हँसने न लगें।

दीवान ने कहा कि गप क्यों समझेंगे। जब यह कहते हैं तो इन्हीं के मुँह से क्यों न कहला दिया जाय। वज़ीर बोला कि यह तो ठीक है परंतु मौक़ा मिलना भी तो मुश्किल है। इस लिए मैं यह चाहता हूँ कि जो इन आग़ा साहिब का कुछ हरज न हो तो ये जैसा कहते हैं उसे मुंशीजी ज्यों का त्यों लिख लें और .फ़ुरसत के वक्त. हुक्म पाकर अर्ज़ कर दें।

.गुलाम ने कहा कि मेरा तो कोई हर्ज नहीं, आप भले ही लिखा लीजिए। तब मुंशी ने एक बढ़िया काग़ज़ पर अच्छी इबारत में बादशाहों के लायक़ पहले उसका मसविदा तैयार किया और वज़ीर ने उसको देख कर .गुलाम को दिखाया। फिर उसने उसमें जो कुछ भूल चूक बताई उसी मुताबिक़ उसे दुरुस्त करके सुनहले काग़ज़ पर साफ़ कराया और कहा कि अब इस पर सबके दस्तख़त हो जाने चाहिए। ताकि जहाँपनाह को इसके सच्चे होने में कोई शक और शुबहा न रहे। यह सुन कर सबने अपने अपने दस्तख़त उसके नीचे कर दिये। फिर वज़ीर ने भी दस्तख़त करके .गुलाम से कहा कि आप भी दस्तख़त कर दीजिए क्योंकि आप के दस्तख़त न होने से जहाँपनाह को पूरा यक़ीन न होगा। इस पर भी जो कोई बात पूछनी होगी तो आपको बुला कर पूछ लेंगे। .गुलाम के सिर पर तो .खून चढ़ा हुआ था; इसके सिवा वज़ीर और बादशाह की तरफ़ से माल ख़रीदने की पूरी पूरी उम्मेद थी। उसके लालच में पड़ कर वज़ीर की चाल तो सोची नहीं और दस्तख़त कर दिये।

फिर वज़ीर .ग़ुलाम को विदा कर के बादशाह के पास गया और अर्ज़ की कि आज एक अजब बात सुनी है जिसको श्रीमानों की सेवा में निवेदन करने के लिए लिखा लाया हूँ, यह कह कर वह कागज़ सिंहासन पर रख दिया ।

बादशाह ने पढ़ कर कहा कि बात क्या यह तो बना बनाया .ख़ून का महज़र (मुक़द्दमा) है। जिसने लिखाया है और दस्तख़त किये हैं वही .ख़ूनी है और उसीने उस सौदागर को मारा है और चकेरों ने भी गवाही दे दी है, फिर क्या बाक़ी रहा । उसको सूली दे दो नहीं तो उस .ख़ून का नाहक़ बवाल अपने सिर रह जावेगा । क़ानून सयासत (दण्डनीति) में लिखा है कि जो बादशाह किसी .ख़ून की ख़बर पाकर तहक़ीक़ात न करे और .ख़ूनी को दंड न दे तो उसे मर कर .ख़ुदा को इसका जवाब देना होगा ।

वज़ीर ने अर्ज़ की कि .ख़ुदावंद सच फ़रमाते हैं; परंतु यह बड़ा आदमी है । यह बड़े क़ाफ़िले का धनी है । दंड देने के पहले क़ाफ़िले वालों से भी पूछ ताछ हो जानी चाहिए । देखें वे इस मामले में क्या जानते हैं और क्या कहते हैं ?

बादशाह ने कहा, अच्छा ! यह कसर भी निकाल लो, परन्तु जैसी सावधानी से तुमने यह मुक़द्दमा खोला है वैसी ही तरकीब से बात-चीत करके क़ाफ़िले के पंचों का भी मन ले लो ।

वज़ीर जो हुक्म कह कर अपने मकान पर आया और .ग़ुलाम को कहला भेजा कि तुम्हारी बातों से जी नहीं भरा है इस लिए कल तुम फिर आना और अपने क़ाफ़िले के भले आदमियों को भी लेते आना ।

.ग़ुलाम दूसरे दिन वज़ीर के मकान पर फिर गया और अपने मेल के मुखिया लोगों को भी साथ ले गया । वज़ीर ने सब का .ख़ूब आदर-सत्कार किया । अच्छे अच्छे खाने खिलाये और अतर-पान दिया । फिर हँसी .ख़ुशी की बातें करने लगा, इतने में बादशाह का चोबदार आया और वज़ीर से बोला कि जहाँपनाह इन आग़ा साहब को याद फ़रमाते हैं । वज़ीर ने पूछा कि क्या मुझे भी याद फ़रमाया है । चोबदार ने कहा कि आपके वास्ते तो कुछ हुक्म नहीं दिया है । वज़ीर ने कहा तो ख़ैर, इन्हीं को ले जाओ; कल मैंने इनकी तारीफ़ कर दी है ।

ग़ुलाम ने कहा कि मैं आपको छोड़ कर अकेला तो नहीं जाना चाहता था परन्तु हुक्म से लाचार हूँ। आप चोबदार को फ़रमा दें कि मेरे क़ाफ़िले की तरफ़ होते चलें तो मैं बादशाह सलामत के लिए कुछ सौगातें भी ले लूँ। वज़ीर ने कहा कि पहले सलाम कर आइए; सौगातें मैं फिर नज़र करा दूँगा।

ग़ुलाम तो चोबदार के साथ चला गया और इधर वज़ीर ने मैदान ख़ाली पा कर पंचों से पूछा कि ये आग़ा साहिब कब से तुम्हारे क़ाफ़िले की गद्दी पर बैठे हैं।

पंच—अभी थोड़ा अरसा हुआ है।

वज़ीर—पहले कौन थे?

पंच—इनके मालिक थे।

वज़ीर—वे क्या हुए?

पंच—उनको शिकार में चीते ने फाड़ डाला।

वज़ीर—तुमने फाड़ते देखा था?

पंच—नहीं।

वज़ीर—फिर कैसे जाना?

पंच—इन आग़ा साहिब के कहने से। क्योंकि ये उनके साथ थे और हम लोग क़ाफ़िले में।

वज़ीर—इनके सिवा और भी कोई साथ था?

पंच—कोई नहीं था।

वज़ीर—क्या ये उनके बेटे हैं?

पंच—नहीं।

वज़ीर—तो कौन हैं? क्या भतीजे हैं?

पंच—उनके बेटा, भतीजा कोई नहीं था। इन्हीं को बेटे और भतीजे के बराबर पाला और पास रक्खा था और अब उनके पीछे यही क़ाफ़िले के मालिक हैं।

वज़ीर—जिस जगह उनको चीते ने फाड़ा वह जगह तुम को मालूम है? वहाँ कोई क़बर या मसजिद बनी है?

पंच—वह जगह हमको मालूम नहीं, न हमने देखी; हमको तो जो इन्हों ने कहा वही मालूम है। क़बर वग़ैरह कोई नहीं बनाई गई क्योंकि क़ाफ़िला सफ़र में था।

वज़ीर—अच्छा वह जगह तो तुमको मालूम होगी कि जहाँ से तुम्हारे अगले मालिक शिकार को गये थे?

पंच—हाँ वह तो मालूम है।

वज़ीर—और वह जगह भी कि जहाँ इन्होंने आकर तुमसे उन्हें चीते के फाड़ डालने का हाल कहा था?

पंच—हाँ वह भी मालूम है।

वज़ीर—दोनों जगहों में कितना फ़ासिला होगा?

पंच—यही दस ग्यारह कोस का।

वज़ीर— तुम्हारी समझ में चीते के फाड़ डालने की बात सच है।

पंच—हमने तो यही बात सुनी है। दूसरी आज तक नहीं सुनी।

वज़ीर—पहले दिन ये यहाँ चकोरों के कबाब देख कर हँसे थे। जब हँसने का सबब पूछा गया तब इन्होंने एक अजब हाल कहा। वह लिख लिया गया है और इनके दस्तख़त भी करा लिये गये हैं। बादशाह सलामत का हुक्म है कि जो पंच भी इसको जानते हों तो उनके भी दस्तख़त करा लिये जायँ।

पंच—वह हाल कहाँ है?

वज़ीर—यह है।

पंच—(पढ़कर और एक दूसरे का मुँह देख कर) हमको तो यह हाल मालूम नहीं है बल्कि आज ही पढ़ा और सुना है।

वज़ीर—तो तुम इस पर दस्तख़त करोगे?

पंच—क्यों?

वज़ीर—इसलिए कि तुम्हारे मालिक ने दस्तख़त कर दिये हैं।

पंच—मालिक की मालिक जाने, हम पराई गोर (क़बर) में क्यों पड़ें?

वज़ीर—(हँस कर) यह गोर है?

पंच—गोर नहीं तो क्या है?

वज़ीर—अच्छा इससे तुम्हारी समझ में कोई बात आई?

पंच—हमारी समझ क्या? समझ तो आपकी है, आप वज़ीर हैं, राज्य का काम करते हैं, शहरों में रहते हैं। हमतो जंगली आदमी हैं, सब दिन इधर उधर मारे मारे फिरते हैं।

वज़ीर—मेरी समझ तो क्या, बादशाह सलामत की समझ में यह मामला ख़ाली अज़ इल्लत नहीं है, कुछ न कुछ दाल में काला है। इस बात की तहक़ीक़ात में, कि आपके अगले मालिक क्या हुए आपको भी मदद देनी होगी।

पंच—इस काग़ज़ की नक़ल मिल जावे तो हम क़ाफ़िले वालों से भी सलाह करलें। मामला बेढब मालूम होता है।

वज़ीर—अच्छी बात है।

इतने में चोबदार वज़ीर को बुलाने आया। वज़ीर पंचों को नक़ल देकर दरबार में गया। ग़ुलाम अभी तक ड्योढ़ी पर ही बैठा था। वज़ीर अंदर से उसके पास आकर बोला कि मुझे बहुत अफ़सोस है कि जहाँपनाह फ़रमाते हैं कि उस आदमी को इन्होंने ही मारा है। ग़ुलाम ने कहा, कौन गवाह है। वज़ीर ने हँसकर कहा, चकोर। मगर आप ख़ातिरजमा रक्खें कि तहक़ीक़ात बग़ैर कोई बात न होगी। ग़ुलाम का मुँह उतर गया। वज़ीर उसको लेकर क़ाफ़िले में आया। ग़ुलाम ने देखा तो सबका दिल उसकी तरफ़ से फिर गया था।

वज़ीर ने क़ाफ़िले का बंदोबस्त करके अपने मुंशी को पंचों के साथ तहक़ीक़ात के वास्ते भेजा। पंचों ने पहले उसको वह जगह दिखाई जहाँ से क़ाफ़िले का वह अगला मालिक शिकार को गया था और फिर उस जगह पर ले आये जहाँ इस ग़ुलाम ने आकर चीते के फाड़ डालने की बात कही थी। मुंशी ने दोनों जगह डेरे खड़े करके बादशाही जासूसों को देख-भाल और पता लगाने के लिए इधर उधर भेजा। वे जंगल और पहाड़ों में हिरनों के पीछे पीछे दौड़ते दौड़ते एक दिन ऐसी जगह जा पहुँचे जहाँ पहाड़ों की खोह में पानी भरा था और बहुत सी चकोरें इधर उधर फिर रही थीं। उन्होंने वहाँ ठहर कर मुंशी को ख़बर दी। मुंशी ने भी आकर और देख कर कहा कि हो न हो यह वही जगह है जिसका पता काग़ज़ से भी चलता है। वज़ीर को अरज़ी लिखी। वज़ीर ग़ुलाम और पंचों को ले कर आया। चकोरें ग़ुलाम को देख कर चिल्लाने लगीं। वज़ीर ने कहा, आग़ा

साहिब! ये फिर गवाही देती हैं। अब क्या कहते हो? बादशाह सलामत .खूब इस मामले के मग़ज़ को पहुँचे हैं। .ग़ुलाम कुछ न बोला किन्तु रोने लगा। वज़ीर ने पानी में से मलबा निकलवाया तो आदमी की हड्डियाँ निकलीं। उँगली की एक हड्डी में मोहर की अँगूठी भी थी। एक पंच ने उसको पढ़ कर अपने सिर से पगड़ी फेंक दी और रो कर कहा कि यह तो मेरे मालिक की मोहर है और .ग़ुलाम को मारने दौड़ा। वज़ीर ने बीच-बचाव करके .ग़ुलाम से पूछा कि अब तुम कहो कि बादशाह को क्या लिखें? उसने कहा कि लिख दो .ग़ुलाम ने नमकहरामी की। वज़ीर ने महज़र लिख कर .ग़ुलाम और .ग़ुलाम के पंचों के और सब लोगों के दस्तख़त कराये और लिफ़ाफ़े में बंद करके बादशाह के पास भेजा। बादशाह का हुक्म आया कि उस नमकहराम .ग़ुलाम को वहीं सूली देकर दोनों की क़बरें बनवा दो और दोनों की क़बरों पर उनके नाम, गुण और कर्म लिख दो। वज़ीर ने ऐसा ही किया। मालिक की क़बर पर लिखा कि इसको .ग़ुलाम ने मारा और .ग़ुलाम की क़बर पर खोदा कि इस नमकहराम ने मालिक को मारा था इसलिए इसको यहाँ बादशाह के हुक्म से सूली दी गई।